Daily
लोकसभा चुनाव - 2024
सच के हक में...
THE PHOTON NEWS
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi
Ranchi • Wednesday, 05 June 2024 • Year : 02 • Issue : 137 • Ranchi Edition • Page : 12 • Price : ₹3 • www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

ये क्या हो गया | NDA को बहुमत BJP को झटका | ठीक है, मगर अभी...

भाजपा 303 से 240, कांग्रेस 52 से 100 तक पहुंची

7 चरणों में 18वीं लोकसभा की मतदान प्रक्रिया एक जून को समाप्त हुई। उसी दिन शाम को तमाम एक्जिट पोल में बीजेपी और एनडीए की बंपर जीत का दावा किया गया, लेकिन 4 जून यानी मंगलवार को एग्जैक्ट पोल के ट्रेंड और नतीजे जब सामने आने लगे तो तस्वीर बिल्कुल अलग दिखाई देने लगी। देर रात तक की काउंटिंग से यह स्पष्ट हो गया कि भाजपा बहुमत के आंकड़े टच नहीं कर सकेगी, मगर एनडीए को पूर्ण बहुमत प्राप्त होता दिखाई पड़ा। चुनाव आयोग की ओर से जारी आंकड़ों पर गौर करें तो अंतिम समय तक भाजपा 240 सीटों पर, जबकि एनडीए 290 सीटों पर बढ़त बनाए हुए था। कांग्रेस 100 सीटों पर आगे थी और 'इंडिया' गठबंधन को 235 सीटों पर बढ़त दिखी। अगर 2019 के लोकसभा चुनाव के रिजल्ट को देखे तो भाजपा 303 से 240 पर लुढ़क गई, जबकि कांग्रेस 52 से 100 पर पहुंच गई। स्पष्ट है कि आगे बनने वाली सरकार में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगी।

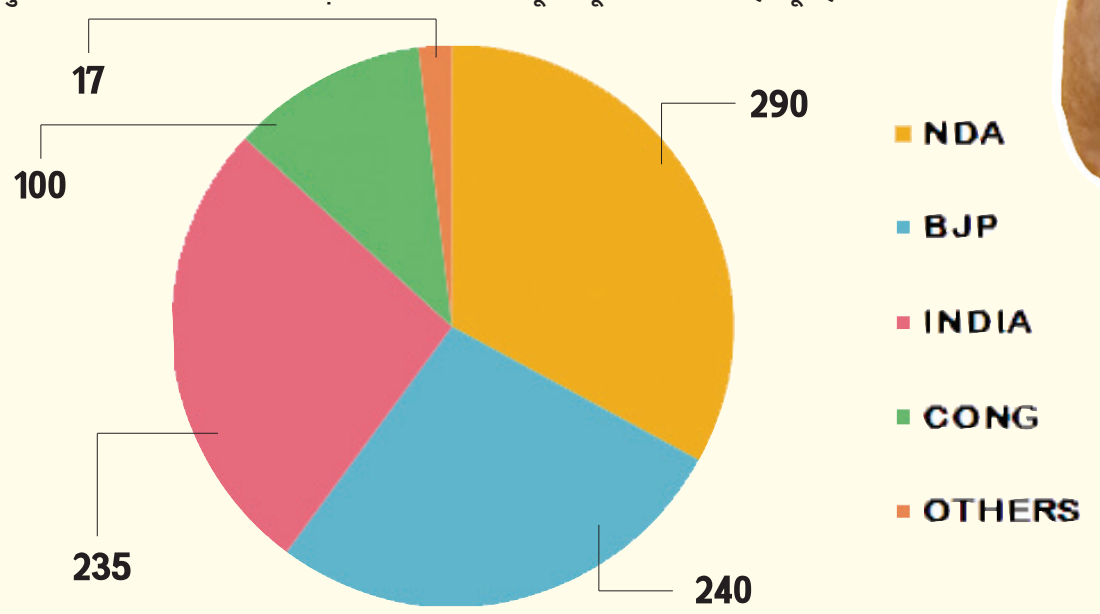

नरेंद्र मोदी वाराणसी लोकसभा सीट से जीते

612970 वोट मिले, कांग्रेस के अजय राय को **152513** वोटों से हराया

राहुल गांधी वायनाड व रायबरेली से जीते

364422 वोटों से वायनाड से और रायबरेली से **390000** वोटों से मिली जीत

झारखंड में एनडीए को 9, 'इंडिया' को 5 सीटों पर जीत

गांडेय विधानसभा उपचुनाव : 26483 वोटों से जीतीं कल्पना सोरेन, बीजेपी के दिलीप वर्मा को हराया

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड की 14 लोकसभा सीटों पर वोटों की गिनती खत्म हो गई। खूंटी से केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा चुनाव हार गए। कांग्रेस के कालीचरण मुंडा चुनाव जीत गए हैं। हालांकि, झारखंड में 8 सीटों पर बीजेपी, जेएमएम तीन, कांग्रेस दो और आजसू एक सीट पर जीत दर्ज की। कोडरमा से बीजेपी प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी चुनाव जीत गई। वहीं, रांची लोकसभा सीट से संजय सेठ जीत गए। उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार और सुबोधकांत सहाय की बेटी यशस्विनी सहाय को हराया। गांडेय उपचुनाव में झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने बाजी मारी।

पश्चिम सिंहभूम से जेएमएम प्रत्याशी जोबा मांझी, खूंटी से कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा, लोहरदगा से कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत, पलामू से बीजेपी प्रत्याशी बीडी राम, चतरा से बीजेपी प्रत्याशी कालीचरण सिंह, कोडरमा से बीजेपी प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी, हजारीबाग से बीजेपी प्रत्याशी मनीष जायसवाल, रांची से बीजेपी प्रत्याशी संजय सेठ, गिरिडीह से आजसू प्रत्याशी चंद्र प्रकाश चौधरी, धनबाद से बीजेपी प्रत्याशी ढुल्लू महतो, जमशेदपुर से बीजेपी प्रत्याशी विद्युत वरण महतो, गोड्डा से बीजेपी प्रत्याशी निशिकांत दुबे, दुमका से जेएमएम प्रत्याशी नलिन सोरेन और राजमहल से जेएमएम प्रत्याशी विजय हांसदा चुनाव जीत गए।

वहीं, मतगणना के बीच बोकारो में बवाल हो गया। आईटीआई मोड़ के पास जयराम समर्थ ने हंगामा किया। कई गाड़ियों के शीशे टूटे। पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े और लाठी चार्ज किया।

कल्पना की जीत ने राज्य को एक नेता दे दिया है। कल्पना झारखंड मुक्ति मोरचा में हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद भी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने में सफल रही।

चम्पाई ने जनता को दिया धन्यवाद

लोकसभा चुनाव के परिणाम लगभग साफ हो गये हैं। झारखंड में इंडिया गठबंधन के पांच प्रत्याशियों ने जीत दर्ज की है। इसे लेकर मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने सोशल मीडिया एक्स पर राज्य की जनता धन्यवाद किया है। उन्होंने लिखा है कि धन्यवाद झारखंड, मात्र एक सांसद के साथ शुरू हुए इस चुनाव अभियान के बाद आपने इंडी गठबंधन के पांच सांसद एवं एक विधायक चुनकर हम पर जो विश्वास दिखाया है, उसके लिए हम लोग आपके आभारी हैं। मुख्यमंत्री ने लिखा है कि सभी विजयी प्रत्याशियों को बधाई एवं हर एक वोटर को धन्यवाद।

ओडिशा में बीजेपी और आंध्र प्रदेश में टीडीपी की सरकार

ओडिशा में 24 साल से सत्ता में काबिज नवीन पटनायक के हाथ से सत्ता खिसक गई है। भाजपा को 147 में से 78 तो बीजेडी को 51 सीटें मिली। वहीं, आंध्र प्रदेश में एनडीए (भाजपा, टीडीपी और जन सेना पार्टी) की सत्ता में वापसी हुई है। टीडीपी 175 में से 134 सीटें जीती। मौजूदा सीएम जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी को सिर्फ 12 सीटों पर सिमट गई। आंध्र में 2019 में वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के जगन मोहन रेड्डी 175 में से 151 सीटों पर एकतरफा जीत दर्ज की थी। राज्य में भाजपा ने चंद्रबाबू नायडू की तेलुगु देशम पार्टी और एक्टर पवन कल्याण की जन सेना पार्टी के साथ गठबंधन किया है।

त्वरित टिप्पणी

अबकी बार, बस नैया पार

ब्रजेश मिश्र
एग्जीक्यूटिव एडिटर
द फोटोन न्यूज

अबकी बार चार सौ पार के नारे के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चुनावी समर में उतरी भारतीय जनता पार्टी को जबरदस्त झटका लगा है। उसका यह चर्चित नारा तो नहीं ही चला, पार्टी 250 का आंकड़ा भी पार करती नहीं दिख रही। देश के कई राज्यों में देर रात तक मतगणना जारी है। ऐसे संकेत हैं कि भाजपा अपने दम पर बहुमत के लिए जरूरी 272 के आंकड़े से दूर रह जाएगी। गनीमत यही है कि भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए को रूझानों के अनुसार, बहुमत मिलता दिख रहा है। ऐसी परिस्थिति में यदि एनडीए की सरकार बनती है तो भाजपा की नीतीश कुमार के जदयू और चंद्रबाबू नायडू के तेलुगु देशम पार्टी पर निर्भरता रहेगी। सरकार चलाने के लिए दोनों दिग्गजों के साथ पार्टी को संतुलन साधने की कवायद करनी पड़ेगी।

भाजपा को लगे इस जोरदार झटके के बाद अब उन कारणों पर गौर किया जाने लगा है, जिनकी वजह से पार्टी का 400 पार का नारा नाकाम हो गया है। भाजपा को दिल्ली, मध्य प्रदेश, गुजरात, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड, जैसे राज्यों में अच्छा जनसमर्थन मिला। केरल में भी पार्टी का खाता खुलता दिख रहा है, लेकिन यूपी, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में जबरदस्त नुकसान हुआ है। इन राज्यों में मोदी का करिश्मा नहीं दोहरा पाने के कारण ही पार्टी बहुमत से दूर रह गई है। अगर उन कारणों की बात करें, जो भाजपा के कमजोर प्रदर्शन की वजह माने जा रहे हैं तो इसमें कुछ परंपरागत मतदाताओं का अलग होना भी है।

शेष पेज 04 पर।

इलेक्शन रिजल्ट देखकर क्रैश कर गया शेयर मार्केट

4389.73 अंकों का सेंसेक्स ने लगाया गोता

1646.65 अंकों की निफ्टी में आई गिरावट

38 लाख करोड़ के करीब निवेशकों के डूबे, बाजार में लगातार मचा रहा हाहाकार

23 मार्च 2020 के बाद सेंसेक्स में दर्ज की गई अब तक की सबसे बड़ी गिरावट

AGENCY NEW DELHI : 18वीं लोकसभा के गठन के लिए हुए चुनाव की मतगणना के दिन मंगलवार 4 जून 2024 को चुनावी नतीजों को देखकर घरेलू शेयर बाजार में चौतरफा हाहाकार मच गया। मंगलवार की सुबह बड़ी गिरावट के साथ खुला शेयर बाजार दोपहर के कारोबार में अपर और लोअर सर्किट के बीच फंसा और शाम को कारोबार के अंत में बड़ी गिरावट के साथ बंद हुआ। कारोबार के अंत में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का प्रमुख संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 4,389.73 अंक या 5.74 फीसदी का गहरा गोता लगातार 72,079.05 अंक पर बंद हुआ। वहीं, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी भी करीब 1,379.40 अंक या 5.93 फीसदी टूटकर 21,884.50 अंक के स्तर पर पहुंच गया। कारोबार के दौरान दोपहर के 12 बजे के बाद सेंसेक्स 5,130.01 अंक का गोता लगाकर 71,338.7 पर पहुंच गया था। वहीं, निफ्टी 1,646.65 अंक की बड़ी गिरावट के साथ 21,606.2 अंक के स्तर पर पहुंच गया था। खबर यह भी है कि बाजार में हाहाकार के बीच निवेशकों के करीब 38 लाख करोड़ डूब गए। मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, बीएसई के प्रमुख संवेदी सूचकांक सेंसेक्स में 23 मार्च 2020 के बाद अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है।

3934 अंकों की गिरावट कोरोना काल में हुई थी

13.15 फीसद टूटकर 25981 पर पहुंचा था सेंसेक्स

इन कंपनियों के शेयर सबसे अधिक टूटे

चुनावी नतीजों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को कमजोर होता देख घरेलू बाजार में मचे उत्पात के बीच सेंसेक्स में सूचीबद्ध जिन कंपनियों के शेयर सबसे अधिक टूटे, उनमें आरईसी (25.19 फीसदी), पावर फाइनांस (23.08 फीसदी), अदाणी पोर्ट्स (21.15 फीसदी), मेल (20.84 फीसदी), एसबीआई (14.40 फीसदी), भारत इलेक्ट्रॉनिक (19.80 फीसदी), हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स (17.83 फीसदी), एचडीएफसी बैंक (5.66 फीसदी), वोडाफोन आइडिया (17.50 फीसदी), केनरा बैंक (14.35 फीसदी) और पंजाब नेशनल बैंक (15.80 फीसदी) शामिल हैं। वहीं, जिन कंपनियों के शेयरों में मजबूती का रुख रहा, उनमें डाबर इंडिया (6.13 फीसदी), हिंदुस्तान यूनिलीवर (5.96 फीसदी), कॉलगेट (4.56 फीसदी), मैरिको (3.44 फीसदी), ब्रिटानिया (3.04 फीसदी), हीरो मोटोकॉर्प (2.91 फीसदी) और ब्लू स्टार (0.11 फीसदी) शामिल हैं। चुनावी नतीजे में एनडीए को तीसरी बार सत्ता में आने की आस में सोमवार 3 जून 2024 को स्थानीय शेयर बाजार में चौतरफा लिवाली से बीएसई सेंसेक्स 2,500 से अधिक अंक की छलांग लगाकर अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था।

कैमरे की नजर में लोकसभा चुनाव का परिणाम

'काली' ने रोका 'अर्जुन' का 'रथ'

पिछले मोदी कैबिनेट में कृषि एवं जनजातीय मंत्रालय के कैबिनेट मंत्री रहे अर्जुन मुंडा को खूंटी लोकसभा सीट से पराजित करने के बाद समर्थकों के साथ विजयी मुद्रा में कालीचरण मुंडा ● फोटोन न्यूज

लोहरदगा सीट की मतगणना के दौरान मौजूद प्रशासनिक अधिकारी

मतगणना की सुबह अखबार पढ़ते कड़िया मुंडा

धनबाद से भाजपा के प्रत्याशी ढुलू महतो की जीत से उत्साहित पार्टी के नेता

चतरा में समर्थकों के साथ पूजा-अर्चना करने पहुंचे भाजपा प्रत्याशी कालीचरण सिंह

खूंटी में मतगणना के दौरान तैनात सुरक्षाकर्मी ● फोटोन न्यूज

कोडरमा सीट से भाजपा की प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी अपने समर्थकों के साथ

मतगणना की तैयारियों में जुटे सरकारी कर्मचारी

लोहरदगा में मतगणना केंद्र के बाहर मौजूद लोग

गिरिडीह में लड्डू तैयार कराते भाजपा नेता ● फोटोन न्यूज

एजेंटों से मतगणना का परिणाम लेते राजमहल से जेएमएम प्रत्याशी विजय हांसदा

कोडरमा से रुझानों के आगे बढ़ने के बाद विक्ट्री साइन दिखातीं अन्नपूर्णा देवी

बड़े भाई से आशीर्वाद लेते लोहरदगा से कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत

राजमहल में मतगणना केंद्र के अंदर प्रवेश करते प्रत्याशी व एजेंट ● फोटोन न्यूज

खूंटी में मतगणना केंद्र के बाहर बैठे कांग्रेस व जेएमएम के कार्यकर्ता

पलामू में पंडाल में मौजूद राजद के कार्यकर्ता ● फोटोन न्यूज

टेंट में बैठे विधायक व कोडरमा से भाकपा माले के प्रत्याशी बिनोद सिंह

लोहरदगा में मतगणना केंद्र के बाहर लगा बैनर ● फोटोन न्यूज

हजारीबाग में मतगणना केंद्र पर पहुंचकर विजयी मुद्रा में मनीष जायसवाल ● फोटोन न्यूज

पलामू सीट से राजद की प्रत्याशी रहीं ममता भुईयां मतगणना केंद्र से बाहर निकलते हुए

चुनाव परिणाम आने के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं ने सड़क पर उतरकर मनाया जश्न

भाजपा प्रत्याशी संजय सेठ की बंपर जीत

PHOTON NEWS RANCHI : रांची लोकसभा क्षेत्र में मंगलवार को सुबह आठ बजे से काउंटिंग प्रारंभ हुई। थोड़े समय के लिए भाजपा उम्मीदवार संजय सेठ कांग्रेस की उम्मीदवार यशास्विनी सहाय से पीछे थे, लेकिन जब आगे बढ़े तो लगातार हर राउंड में उनके जीत का फासला बढ़ता गया और अंत में उन्हें शानदार जीत मिली। प्रत्याशी संजय सेठ 17 वें राउंड में 1,19,116 वोटों से आगे चल रहे। सेठ को तब तक 6,40,698 वोट मिले थे, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय 5,21,582 वोट लाकर दूसरे स्थान पर बनी हुई थी। तीसरे स्थान पर झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति (जेबीकेएसएस) के प्रत्याशी देवेन्द्र नाथ महतो को 1,29,298 वोट मिले थे। साथ ही नोटा पर 7,788 वोट डाले गए थे।

संजय सेठ आठवें राउंड में 84,754 वोटों से आगे थे। संजय सेठ 3,20,542 वोट पाकर पहले स्थान पर थे जबकि कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय 2,35,788 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर बनी हुई थी। नोटा पर 3,931 वोट डाले गए थे।

नौवें राउंड में 82,583 वोटों से भाजपा प्रत्याशी संजय सेठ आगे चल रहे थे। नौवें चरण की मतगणना के बाद भाजपा प्रत्याशी संजय सेठ को अब तक 3,54,533 वोट मिले थे, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय 2,71,950 वोट लाकर दूसरे स्थान पर बनी हुई थी। तीसरे स्थान पर झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति (जेबीकेएसएस) के प्रत्याशी देवेन्द्र नाथ महतो को 83,166 वोट मिले थे। साथ ही नोटा पर 4388 वोट डाले गए थे। 12वें राउंड में 93,138 वोटों से आगे चल रहे थे। सेठ को अब तक 4,60,307 वोट मिले थे जबकि कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय 3,67,169 वोट लाकर दूसरे स्थान पर बनी हुई थी। तीसरे स्थान पर झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति के प्रत्याशी देवेन्द्र नाथ महतो को 1,02,349 वोट मिले थे।

चुनाव परिणाम के बाद संजय सेठ भाजपा के अन्य नेताओं के साथ विजयी मुद्रा में।

एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई देते भाजपा कार्यकर्ता।

अमित शाह ने एनडीए की बैठक में सुदेश को बुलाया

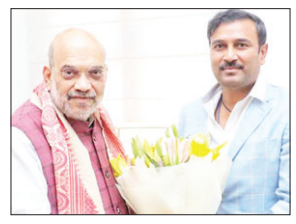

PHOTON NEWS RANCHI : लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद सभी पार्टियां और गठबंधन रणनीति बनाने में जुट गए हैं। इसी क्रम में नई दिल्ली में एनडीए की बैठक बुधवार को शाम चार बजे से होगी। इसमें सभी घटक दलों के नेताओं को बुलाया जा रहा है। गृह मंत्री अमित शाह खुद घटक दलों के नेताओं से बात कर रहे हैं। उन्होंने झारखंड में अपनी सहयोगी पार्टी आजसू के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश महतो को फोन कर बैठक में आने का आमंत्रण दिया है। सुदेश महतो इस बैठक में भाग लेने के लिए बुधवार को दिल्ली रवाना होंगे।

झारखंड से संसद में दिखेंगे छह नए चेहरे

RANCHI : झारखंड से इस बार संसद में छह नए चेहरे दिखेंगे। इसमें वर्तमान के चार विधायक सहित एक पूर्व विधायक शामिल हैं। नए चेहरे के रूप में चतरा से जीत हासिल करने वाले भाजपा उम्मीदवार कालीचरण सिंह होंगे। इसमें भाजपा के दो और झामुमो के दो विधायक शामिल हैं। एक कांग्रेस के पूर्व विधायक हैं। कालीचरण सिंह पहली बार संसद पहुंचेंगे। हजारीबाग से भाजपा उम्मीदवार मनीष जायसवाल और धनबाद से भाजपा उम्मीदवार ढुल्लू महतो ने जीत हासिल की है। झामुमो से जोबा मांझी और नलिन सोरेन से जीत हासिल की। कांग्रेस के पूर्व विधायक सुखदेव भगत ने लोहरदगा से जीत हासिल की है।

जीत का जश्न मनाते भाजपा कार्यकर्ता।

वोटों की गिनती करते कर्मचारी।

भाजपा कार्यालय के सामने खुशी का इजहार करते भाजपा कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

जीत के बाद खास स्टाइल में बच्चों के साथ भाजपा कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

जीत के बाद रामलला की तस्वीर के साथ भाजपा की महिला कार्यकर्ता।

काउंटिंग के दौरान सुरक्षा में तैनात जवान।

रांची भाजपा कार्यालय में शॉर्ट सर्किट से लगी आग

PHOTON NEWS RANCHI : प्रदेश भाजपा कार्यालय में शॉर्ट सर्किट से मंगलवार को आग लग गई, जिससे थोड़ी देरी के लिए कार्यालय में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। कार्यालय में मौजूद सभी लोग बाहर निकलने लगे। हालांकि, थोड़ी देर में ही आग पर काबू पा लिया गया। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी लोकसभा चुनाव के परिणाम पर मंथन कर रहे थे।

'इंडिया' गठबंधन के देशभर में शानदार प्रदर्शन पर कांग्रेस मुख्यालय में जश्न

PHOTON NEWS RANCHI : इंडिया गठबंधन के झारखंड समेत पूरे देश में बेहतर प्रदर्शन को लेकर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में कांग्रेस नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने जश्न मनाया। झारखंड कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर के नेतृत्व में पटाखे जलाकर और मिठाइयां बांटकर खुशियां मनायी गयीं। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने जनता के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि एग्जिट पोल के आंकड़े एग्जिट हो गए। जनता ने अपने जनादेश में हमें भरपूर समर्थन दिया। झारखंड कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि एग्जिट पोल एग्जिट हो गया। जनता के जनादेश को जिस तरह से कम आंका गया, उसे जनता ने ध्वस्त कर दिया। राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा और भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान देश के करोड़ों लोगों से मिले और उनकी समस्याओं को जानकर संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार की। उनके समस्याओं के समाधान का रास्ता निकालकर हम इस चुनाव में जनता के बीच गए। इसी का परिणाम है कि जनता ने भाजपा के नेतृत्व को नकारते हुए हम पर भरोसा कर हमें भरपूर समर्थन दिया।

जनता ने खुद लड़ी संविधान बचाने की लड़ाई : राजेश ठाकुर ने कहा कि जनता ने संविधान बचाने की लड़ाई खुद सामने आकर लड़ी और हमें देश में समर्थन दिया है। भाजपा ने नैतिक रूप से जनता का समर्थन खो दिया है क्योंकि जिस मोदी की गारंटी पर भाजपा चुनाव लड़ रही थी, उस भाजपा को जनता ने वैसा समर्थन नहीं दिया। उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता ने केंद्र की तानाशाही सरकार के खिलाफ अपना रोष प्रकट किया है। झारखंड में इंडिया महागठबंधन की सरकार बनते ही इसे गिराने का प्रयास किया जा रहा था, परंतु वह इसमें सफल नहीं हो पा रहे थे। चुनाव के दौरान जिस तरह से महागठबंधन में शामिल दलों और परिवार को तोड़ने का प्रयास किया गया, उसे भी जनता ने देखा और उसे कसौटी पर परखा, जिसका परिणाम यह रहा कि बीजेपी झारखंड में दहाई अंक तक भी नहीं पहुंच पायी।

राजेश ठाकुर को मिठाई खिलाते कांग्रेस कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

झारखंड कांग्रेस प्रभारी के नेतृत्व में बेहतर प्रदर्शनः राजेश ठाकुर ने कहा कि झारखंड कांग्रेस प्रभारी गुलाम अहमद मीर के कुशल नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने अपना बेहतर प्रदर्शन किया। इंडिया गठबंधन की आपसी एकता और बेहतर समन्वय व चुनावी प्रबंधन के कारण हमने झारखंड में अच्छा प्रदर्शन किया है और इसमें इंडिया गठबंधन में शामिल दलों के नेता एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा है। हम उनका भी आभार व्यक्त करते हैं।

मौके पर ये थे उपस्थित : इस अवसर पर प्रमुख रूप से अमूल्य नीरज खलको, राकेश सिन्हा, सतीश पॉल मुंजनी, मानस सिन्हा, सोनाल शांति, मदन मोहन शर्मा, नेलीनाथन, ऋषिकेश सिंह, आभा सिन्हा, अजय सिंह, गजेंद्र सिंह, अमृत सिंह, रोहण ठाकुर, अख्तर अली गुलजार अहमद, संजय कुमार, सुशील कुमार पिंटू समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

3.02 करोड़ के बजट के साथ राज्य सरकार ने शुरू की मेला की तैयारी, श्रद्धलुओं को मिलेंगी सभी सुविधाएं

विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला 22 जुलाई से

PHOTON NEWS RANCHI : विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला 22 जुलाई से शुरू हो रहा है। राज्य सरकार इस बार श्रद्धालुओं को कई तरह की सुविधाएं देने जा रही है। मेले में एसी अस्पताल से लेकर एंबुलेंस तक की सुविधा रहेगी। सरकार की ओर इस बार 3.02 करोड़ का बजट तैयार किया गया है। स्थानीय जिला प्रशासन एवं सिविल सर्जन ने इससे जुड़ा प्रस्ताव बनाकर स्वास्थ्य विभाग को भेज दिया है। स्वास्थ्य विभाग भेजे गये प्रस्ताव में कहा गया है कि 30 एंबुलेंस के स्थान पर 40 एंबुलेंस की तैनाती की जायेगी। सभी एंबुलेंस एयर कंडीशनर युक्त होगी। इस बार चार से पांच अस्थायी हॉस्पिटल बनाये जायेंगे, जहां पर तीन शिफ्ट में डॉक्टर और स्वास्थ्य कर्मचारी तैनात रहेंगे। 150 की संख्या में डॉक्टर और चार सौ से 500 की संख्या में एएनएम सहितअन्य स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहेंगे। कांवरिया रूट लाइन में पांच एसी युक्त हॉस्पिटल तैनात रहेंगे। प्रस्ताव में यह भी जिक्र किया गया है कि झारखंड बिहार बॉर्डर से लेकर बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर तक पांच ऐसे अस्थाई अस्पताल का निर्माण कराया जाएगा, जिसमें तीन से चार कमरे वातानुकूलित रहेंगे। इस बार श्रावणी मेले में जिला प्रशासन मोटरसाईकिल एंबुलेंस की व्यवस्था करेगा। रिमोट इलाकों में बीमार पड़ने वाले श्रद्धालुओं को अस्थाई व स्थाई अस्पताल तक पहुंचाने के लिए मोटरसाइकिल एंबुलेंस का उपयोग किया जाएगा। श्रावणी मेले में उमड़ने वाली भीड़ को देखते हुए इस बार प्रशासन अलग से टोटो एंबुलेंस की भी व्यवस्था करेगा। भीड़ के दौरान यह देखा जाता है कि संकीर्ण सड़कों के कारण मरीजों को अस्पताल ले जाने में काफी परेशानी होती है। स्वास्थ्य विभाग भीड़ वाले संकीर्ण स्थान से चार पहिया एंबुलेंस तक पहुंचाने के लिए टोटो एंबुलेंस का प्रयोग करेगा।

रिम्स में सेंट्रलाइज डायग्नोस्टिक हब का होगा निमार्ण

RANCHI : रिम्स में मरीजों को पैथोलॉजिकल, बायोकेमिकल, रेडियोलॉजिकल एवं अन्य जांच के लिए परेशान होने की जरूरत नहीं होगी। अस्पताल क्षेत्र में जल्द ही सेंट्रलाइज डायग्नोस्टिक हब का निर्माण होगा। इसके लिए जगह चिन्हित कर ली गई है। ओपीडी क्षेत्र के पास ही पैथोलॉजिकल, लैब मेडिसिन और रेडियोलॉजिकल जांच के लिए 6-8 काउंटर बनाए जाएंगे।रिम्स निदेशक प्रो डॉ राजकुमार ने मंगलवार को इसको लेकर परिसर का निरीक्षण किया। उनके साथ डीन डॉ विद्यापति, चिकित्सा अधीक्षक डॉ हीरेन्द्र बिरुआ, उपाधीक्षक डॉ शैलेश त्रिपाठी, रेडियोलोजी विभागाध्यक्ष डॉ सुरेश टोप्पो आदि मौजूद थे।

जनता ने 400 पार के नारे को किया खारिज : विजय

RANCHI : मंगलवार को संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सह झारखंड छत्तीसगढ़ प्रभारी विजय शंकर नायक ने देश में हुए चुनाव के परिणाम आने पर कहा कि मुंगेरीलाल के हसीन सपने टूट गए। जनता ने भाजपा के अबकी बार 400 पार के नारे को नकारा और उसके घमंडिया विचारधारा को एक सिरे से खारिज किया। अपनी प्रतिक्रिया में उक्त बातें कहीं। इन्होंने यह भी कहा कि भारतीय जनता पार्टी के नेता सत्ता मे रहने के कारण घमंड और अहंकार से ओतप्रोत थे तथा जनता से किए गए वादों को इन्होने जुमलेबाजी कह कर नकारा, जिस कारण जनता ने उन्हें भी नकारने का काम और उनकी औकात बताने का काम किया है । नायक ने यह भी कहा की जनता ने अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी को हराकर पूरे देश में यह संदेश दिया कि मंदिर मस्जिद की राजनीति अब देश में नहीं चलने वाली है।

लोकसभा चुनाव का परिणाम दोहराया, सिंहभूम में इंडिया तो जमशेदपुर में एनडीए ने परचम लहराया

जीत के बाद समर्थकों के साथ जोबा मांझी

जीत के बाद समर्थकों के साथ बिद्युत बरण महतो

कोल्हान में 50-50

पहले राउंड से ही भाजपा प्रत्याशी बिद्युत बरण महतो व जोबा मांझी ने बनाए रखी बढ़त

वीरेंद्र ओझा, जमशेदपुर

देश भर में भले ही लोकसभा चुनाव के परिणाम ने चौंकाया हो, लेकिन कोल्हान में मैच बराबरी का रहा। कोल्हान में एनडीए और इंडिया गठबंधन ने पिछले चुनाव की तरह अपना प्रदर्शन दोहराया है। प्रमंडल के अंतर्गत आने वाली दो सीटों में से एक सिंहभूम संसदीय क्षेत्र से इंडिया गठबंधन की झामुमो प्रत्याशी जोबा मांझी विजयी रहीं। वहीं दूसरी लोकसभा सीट जमशेदपुर से भाजपा प्रत्याशी बिद्युत बरण महतो विजयी घोषित किए गए हैं। सिंहभूम सीट पर बस इतना ही अंतर रहा कि इस बार कांग्रेस की जगह झामुमो का प्रत्याशी विजयी रहा। जबकि भाजपा ने जमशेदपुर में लगातार तीसरी बार अपने सांसद पर भरोसा जताया और परिणाम भी आशा के अनुरूप रहा। सिंहभूम सीट पर मनोहरपुर की विधायक जोबा मांझी ने 1,68,402 मतों से भाजपा प्रत्याशी सांसद गीता कोड़ा को हरा दिया। वहीं जमशेदपुर सीट से सांसद व भाजपा प्रत्याशी बिद्युत बरण महतो लगभग ढाई लाख मतों से इंडिया गठबंधन के झामुमो प्रत्याशी व बहरागोड़ा के विधायक समीर मोहंती से आगे रहे।

सिंहभूम ने दलबदल को नकारा

सिंहभूम सीट पर वर्ष 2014 में भाजपा के प्रत्याशी रहे स्व. लक्ष्मण गिलुवा की जीत हुई थी। इस बार के चुनाव में सिंहभूम के मतदाताओं ने दलबदल को नकार दिया। 2019 के चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर गीता कोड़ा सांसद बनीं, लेकिन वर्ष 2024 के चुनाव में उन्होंने अंतिम समय में पाला बदल लिया। इससे मतदाता नाराज हो गए। वहीं जमशेदपुर सीट पर भाजपा प्रत्याशी बिद्युत बरण महतो निर्विवाद रूप से अपनी जीत की हैट्रिक बनाने में सफल रहे। पूर्वी सिंहभूम की सभी पांच सीटों पर काबिज इंडिया गठबंधन के विधायक अपने सहयोगी झामुमो के बहरागोड़ा विधायक समीर मोहंती को दिल्ली नहीं भेज सके।

सिंहभूम संसदीय निर्वाचन क्षेत्र

मतगणना समाप्त

● जोबा मांझी- झामुमो	-	5,20,64
● गीता कोड़ा- भाजपा	-	3,51,762
● दामोदर सिंह हांसदा- निर्दलीय	-	44,292
● माधव चंद्र कुंकल- निर्दलीय	-	19,834
● संग्राम मार्डी- निर्दलीय	-	16,111
● परदेशीलाल मुंडा- बसपा	-	8742
● दुगार्लाल मुर्मू- निर्दलीय	-	4924
● चित्रसेन सिंकू- झारखंड पार्टी	-	3210
● विश्वनाथ मार्डी-आंबेडकराइट पार्टी ऑफ इंडिया	-	3070
● आशा कुमारी मुंडा- निर्दलीय	-	2754
● कृष्णा मार्डी- झामुमो-उलगुलान	-	2615
● सुधारानी बेसरा-पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया-डेमोक्रेटिक		-2409
● बीर सिंह देवगम- राइट टू रिकॉल पार्टी	-	1927
● पानमानी सिंह-एसयूसीआई-कम्युनिस्ट	-	1801
● नोटा	-	23,982

जमशेदपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र

(मतगणना जारी)

● बिद्युत बरण महतो- भारतीय जनता पार्टी	-	7,19,650
● समीर कुमार मोहंती, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा	-	4,42,167
● इंद्रदेव प्रसाद, निर्दलीय	-	8424
● नोटा	-	7064
● अरुण महतो, निर्दलीय	-	7309
● आनंद मुखी, निर्दलीय	-	6335
● प्रणव कुमार महतो, बहुजन समाज पार्टी	-	6070
● विश्वनाथ महतो, निर्दलीय	-	5221
● अंगद महतो, आमरा बंगाली पार्टी	-	4871
● जुझार सोरेन, निर्दलीय	-	4226
● धार्मू टुडू, अंबेडकराइट पार्टी ऑफ इंडिया	-	3265
● जितेंद्र सिंह, निर्दलीय	-	3157
● सनका महतो, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)	-	3129
● मनोज गुप्ता, लोकहित अधिकार पार्टी	-	2347
● साधु चरण पाल, निर्दलीय	-	2285
● सौरभ विष्णु, निर्दलीय	-	2231
● शेख अखिरुद्दीन, बहुजन महा पार्टी	-	2082
● अशोक कुमार-पीपल्स पार्टी ऑफ इंडिया (डेमोक्रेटिक)	-	2030
● महेश कुमार, राइट टू रिकॉल पार्टी	-	1949
● जी. जयराम दास, निर्दलीय	-	1919
● अरुण कुमार शर्मा, भारतीय आजाद सेना	-	1792
● डोमन चन्द्र भकत, भागीदारी पार्टी (पी)	-	1338
● बबलू प्रसाद दांगी, निर्दलीय	-	1138
● ज्ञान सागर प्रसाद, निर्दलीय	-	1039
● पार्वती किस्कू, निर्दलीय	-	967

बिद्युत ने लगाई हैट्रिक, तोड़ा मिथक

जमशेदपुर लोकसभा सीट से बड़ी जीत दर्ज कर बिद्युत बरण महतो ने न केवल लगातार तीसरी जीत की हैट्रिक लगाई, बल्कि इस जीत ने यह मिथक भी तोड़ दिया कि जमशेदपुर से कोई लगातार तीन बार नहीं जीत सकता। जानकार बताते हैं कि झामुमो ने कमजोर प्रत्याशी देकर बिद्युत की राह आसान कर दी थी। इंडिया गठबंधन ने जमशेदपुर के उम्मीदवार की घोषणा भी सबसे अंत में की थी, जिससे समर्थकों में निराशा का भाव भी उत्पन्न हो रहा था। वहीं, बिद्युत महतो के नाम की घोषणा लगभग एक माह पहले हो गई थी, जिससे उन्हें तैयारी करने का काफी वक्त मिला। भाजपा व आजसू कार्यकर्ताओं ने भी जमकर प्रचार किया। हालांकि समीर मोहंती के लिए झामुमो के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य और मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने भी जमशेदपुर में लगातार कैंप किया। लेकिन मतदाता पर इसका असर कम दिखा।

जमशेदपुर सीट पर जीत के बाद साकची में ढोल नगाड़े के साथ जुलूस निकालते भाजपा कार्यकर्ता

साकची में बिद्युत की जीत का जश्न मनाते भाजपा कार्यकर्ता ● फोटोन न्यूज

को-ऑपरेटिव कॉलेज परिसर में बैरिकेड लगाकर जांच करते पुलिस के जवान

साकची में जीत की खुशी मनाते जदयू के नेता व कार्यकर्ता

जमशेदपुर सीट पर जीत को लेकर आश्वस्त थी भाजपा

जमशेदपुर में जीत पर जश्न मनाते भाजपा नेता ● फोटोन न्यूज

जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज के बाहर टेंट में बैठे झामुमो कार्यकर्ता

PHOTON NEWS JSR:

जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज में जब सुबह 8 बजे मतगणना शुरू हुई, तो इससे पहले ही कॉलेज परिसर के बाहर भाजपा व झामुमो के कार्यकर्ता अपने-अपने शिविर में जम गए थे। भाजपा के शिविर में जिलाध्यक्ष सुधांशु ओझा व पूर्व जिलाध्यक्ष देवेंद्र सिंह सहित अन्य कार्यकर्ता थे, जबकि झामुमो के शिविर में कोई बड़ा कार्यकर्ता नहीं था। दरअसल भाजपा जमशेदपुर सीट पर जीत को लेकर पहले से आश्वस्त थी। पहले राउंड से ही जब बिद्युत बरण महतो ने बढ़त लेनी शुरू की, तो अंत तक आगे ही रहे। पांचवें राउंड में तो कॉलेज परिसर के बाद भाजपा कार्यकर्ता आतिशबाजी के साथ नारेबाजी करने लगे थे, जबकि झामुमो के शिविर में सन्नाटा पसरा रहा।

मेले जैसा रहा नजारा : जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज परिसर के बाहर सुबह से ही मेले जैसा नजारा रहा। चाट-पकौड़ी, कोल्डड्रिंक्स, पानी की बोतल से लेकर चाय-नाश्ते की दुकान सज गई थी। राजनीतिक दलों के कैंप में हालांकि खानपान की उचित व्यवस्था की गई थी, इसके बावजूद इन दुकानों-ठेलों पर खरीदारी हो रही थी।

सुरक्षा के रहे कड़े इंतजाम : इस बार मतगणना के दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम थे। जुबिली पार्क गेट से ही बेरिकेडिंग लगाकर सीएच एरिया की ओर जाने वालों से पुलिस के जवान पूछताछ कर रहे थे। वहां से निकलने के बाद सेंटर फॉर एक्सीलेंस के पास और कॉलेज गेट के साथ मीडिया गैलरी से पहले भी पास की गहनता से जांच की जा रही थी।

को-ऑपरेटिव कॉलेज परिसर में बैरिकेड लगाकर जांच करते पुलिस के जवान

साकची में जीत की खुशी मनाते जदयू के नेता व कार्यकर्ता

चाईबासा में जश्न मनाते इंडिया गठबंधन के कार्यकर्ता ● फोटोन न्यूज

चाईबासा में ढोल नगाड़ा बजाते झामुमो कार्यकर्ता ● फोटोन न्यूज

चाईबासा में नृत्य करते झामुमो के उत्साहित कार्यकर्ता ● फोटोन न्यूज

पेज 1 का शेष... (अबकी बार, बस नैया पार)

इसके अलावा यूपी में बसपा के कमजोर होने से बने नए समीकरण का लाभ पार्टी को नहीं मिला। राम मंदिर निर्माण और धारा 370 हटाने जैसे अहम फैसलों से कम से कम यूपी के आम मतदाता प्रभावित नहीं हुए। पार्टी को इन फैसलों से परिणाम में सकारात्मक प्रभाव की उम्मीद थी। अयोध्या में बने भव्य राम मंदिर में गत 22 जनवरी को धूमधाम से प्राण-पतिष्ठा का कार्यक्रम हुआ। पूरे देश खासकर उत्तर प्रदेश में माहौल राममय दिखा, जिससे भाजपा को उम्मीद जगी कि चुनाव में उसे राम मंदिर का फायदा मिलेगा, लेकिन अब तक के रूझान बता रहे हैं कि राम मंदिर निर्माण से पार्टी को फायदा नहीं पहुंचा। हिंदू मतों का बिखराव हुआ। यहां तक कि अयोध्या जिस फैजाबाद लोकसभा क्षेत्र में पड़ती है, वहां भी भाजपा प्रत्याशी की हार हो गई। भाजपा की हार का एक और बड़ा कारण पार्टी का अति-आत्मविश्वास भी रहा। पूरे चुनाव के दौरान सिर्फ मोदी नाम की गूंज थी। पार्टी ऐसा संकेत दे रही थी कि मोदी नाम से ही 400 का आंकड़ा पार कर जाएगी। इसका साइड इफेक्ट यह हुआ कि पार्टी कार्यकर्ता उदासीन हो गए। शुभचिंतक भी फीलगुड के मूड में आ गए। अपने समर्थक मतदाताओं को मतदान केंद्र तक पहुंचाने या दूसरों को पार्टी के पक्ष में वोट डालने के लिए प्रेरित करने में भी कई जगह कार्यकताओं ने दिलचस्पी नहीं दिखाई। भाजपाईयों का यह मुगालता दूसरी बार पार्टी के कमजोर प्रदर्शन का कारण बना। भाजपाईयों ने अटल बिहारी वाजपेयी के समय वर्ष 2004 में हुए लोकसभा चुनाव में शाइनिंग इंडिया के नारे के साथ कुछ इसी तरह का आत्मविश्वास दिखाया था। मतदान के दौरान वोटरों ने पार्टी को जोर का झटका दे दिया था।

इस बार मोदी को जो झटका लगा है, उसमें युवाओं की नाराजगी भी एक कारण है। विपक्ष ने अग्निवीर को बड़ा मुद्दा बना दिया। बेरोजगारी को लेकर भौकाल टाइट किया। कई राज्यों, खासकर यूपी में पेपर लीक का मामले भी बड़ा मुद्दा बना गया। इससे युवाओं के भीतर पनप रहा आक्रोश भाजपा के खिलाफ गया। इन नतीजों से यह भी पता चला है कि बार-बार व्यक्ति विशेष के नाम पर कोई पार्टी चुनाव नहीं जीत सकती। इस बार मोदी के नाम के भरोसे रही भाजपा ने टिकट वितरण में घोर लापरवाही दिखाई। कई ऐसी सीटों पर वैसे उम्मीदवारों को उतार दिया, जिनके खिलाफ जनता में भारी नाराजगी थी। जातीय समीकरण पर गौर नहीं करना, दलबदलुओं को टिकट देना और सिर्फ मोदी के भरोसे रह जाना पार्टी को महंगा पड़ गया। भाजपा यह आकलन नहीं कर सकी कि हिंदी पट्टी के कई राज्यों में मोदी मैजिक की चमक पहले से फीकी पड़ गई है। भाजपा विपक्ष के संविधान और आरक्षण को लेकर शुरू किए गए विमर्श में उलझ गई। विपक्ष ने जिस तरह आरक्षण खत्म करने, संविधान को खतरे में डालने और मोदी के तीसरी बार पीएम बनने पर संविधान को ही खत्म कर देने का डर दिखाया, उसका संदेश-संकेत निचले तबके के वोटरों तक पहुंच गया। भाजपा विपक्ष के प्रचार को सिरे से खारिज करने में कामयाब नहीं हो सकी। भाजपा की चुनावी हार में मुस्लिमों की नाराजगी और गोलबंदी भी एक बड़ा फैक्टर रही। हालांकि मोदी सरकार की विभिन्न योजनाओं का मुस्लिमों को फायदा मिला। भाजपा ने पसमांदा मुसलमानों को अपने पाले में करने के निए कई जतन किए। सारी कवायद नाकाम रही। मुस्लिमों ने भाजपा को पूरी तरह नकार कर विपक्ष का साथ दे दिया। भाजपा की हार को मौसम के प्रकोप से भी जोड़ा जा रहा है। प्रचंड गर्मी में कई जगहों पर शहरी क्षेत्रों में मतदाताओं ने वोट डालने को लेकर उत्साह नहीं दिखाया। मोदी के लिए मतदाओं का जैसा उत्साह 2014 या 2019 के चुनाव में दिखा था, वैसा नजारा इस बार गायब रहा। लिहाजा कई सीटों पर पार्टी को कम अंतर से हार का सामना करना पड़ा। भाजपा ने अपने अनेक वैसे सांसदों को मैदान में उतार दिया था, जिनको लेकर जनता में भारी नाराजगी थी। स्थानीय स्तर पर कई ऐसे कारक बन गए, जिनकी वजह से लोकसभा का चुनाव लोकल मुद्दों तक सीमित हो गया। कई जगहों पर वोटरों ने इस चुनाव को राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में न देखकर स्थानीय चश्मे से निहारा। भाजपा इस चुनाव को राष्ट्रीय मुद्दों से जोड़ने में पूरी तरह सफल नहीं हो सकी। ऊपर से सात चरणों में हुए इस चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने अलग-अलग चरण में जिस तरह के अलग-अलग मुद्दे उठाए और विपक्ष के खिलाफ जिस भाषा का इस्तेमाल किया, वह भी भाजपा के लिए बूमरैंग साबित हुआ। विपक्ष जनता तक यह बात पहुंचाने में सफल रहा कि मोदी प्रधानमंत्री पद की गरिमा और प्रतिष्ठा के अनुरूप भाषा का इस्तेमाल नहीं कर रहे।वह सड़क छाप बोली बोल रहे हैं, जो प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे व्यक्ति को शोभा नहीं देता। ऐसे व्यक्ति से पिंड छुड़ा लेना जनता के लिए जरूरी है। विपक्ष की इस मुहिम को भी भाजपा प्रभावी तरीके से काट नहीं सकी और नजदीक पहुंचकर भी बहुमत का आंकड़ा छूने से दूर रह गई।

लोकसभा चुनाव से पहले मुख्यमंत्री की विश्वसनीयता पर लगातार उठ रहे थे सवाल

नीतीश का जलवा बरकरार विरोधियों को लगा बड़ा झटका

AGENCY KISHANGUNJ : बिहार में वोटों की गिनती जारी है। फिलहाल एनडीए बिहार में 33 सीटों पर लीड कर रही है लेकिन सियासी गलियारे में इस बात पर चर्चा होने लगी है कि बिहार में अब भी नीतीश कुमार का जलवा बरकरार है, क्योंकि ताजा रुझान जो सामने आ रहे है वो हैरान करने वाला है।

लोकसभा चुनाव से पहले नीतीश कुमार की विश्वसनीयता पर लगातार सवाल खड़े हो रहे थे। उनके एनडीए में शामिल होने पर कई तरह की बातें की जाने लगी थी लेकिन अब रूझान सामने आने के बाद ये कहा जाने लगा है कि उनका जलवा अब भी बरकरार है। दरअसल, पहली बार ऐसा हुआ है कि जब बिहार में बीजेपी नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ी। बीजेपी ने 40 में से 17 सीटों पर उम्मीदवार उतारे जबकि जेडीयू के हिस्से में 16 सीटें आई थीं। 5 सीटों पर चिराग पासवान और एक सीट से हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा ने उम्मीदवार उतारे थे। वहीं, उपेन्द्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक मोर्चा भी एक सीट पर लड़ी।

खबर लिखे जाने तक बीजेपी से कम सीटों पर चुनाव लड़कर भी जेडीयू गठबंधन में सबसे अधिक सीटों पर बढ़त बनाए हुए है। अगर ये रुझान नतीजों में बदलते हैं तो यह नीतीश कुमार के लिए संजीवनी की तरह होगा। आप यहां गौर करे कि एग्जिट पोल अनुमानों में नीतीश कुमार की पार्टी को नुकसान के अनुमान जताए गए थे लेकिन हुआ इसके ठीक उलट। गौरतलब है कि साल 2019 के लोकसभा चुनाव में नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू भी बीजेपी के बराबर यानी 17-17 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। इनमें बीजेपी कोटे के सभी प्रत्याशियों की जीत हुई थी जेडीयू ने 16 सीटों पर फतह हासिल की थी। चिराग पासवान की पार्टी भी सभी 6 सीटों पर जीत दर्ज की थी। वहीं, किशनगंज सीट से कांग्रेस की एकमात्र जीत हुई थी।

लोकसभा चुनाव 2024 परिणाम

वाल्मीकिनगर	बेतिया	पूर्वी चंपारण	शिवहर	सीतामढ़ी	मुजफ्फरपुर	वैशाली
जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते
सुनील कुमार पार्टी : जदयू	संजय जायसवाल पार्टी : बीजेपी	राधामोहन सिंह पार्टी : बीजेपी	लवली आनंद पार्टी : जदयू	देवेशचन्द्र ठाकुर पार्टी : जदयू	राजभूषण चौधरी पार्टी : बीजेपी	वीणा देवी एलजेपी आर

गोपालगंज	सारण	हाजीपुर	दरभंगा	मधुबनी	झंझारपुर	पूर्णिया
जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते
आलोक कु. सुमन पार्टी : जदयू	राजीव प्रताप रूडी पार्टी : बीजेपी	चिराग पासवान एलजेपीआर	गोपाल जी ठाकुर पार्टी : बीजेपी	अशोक यादव पार्टी : बीजेपी	आरपी मंडल पार्टी : जदयू	पप्पू यादव पार्टी : निर्दलीय

बांका	भागलपुर	मुंगेर	सिवान	नालंदा	कटिहार	काराकाट
जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते
गिरधारी यादव पार्टी : जदयू	अजय कु . मंडल पार्टी : जदयू	राजीव रंजन सिंह पार्टी : जदयू	विजयालक्ष्मी पार्टी : जदयू	कौशलेंद्र कुमार पार्टी : जदयू	तारिक अनवर पार्टी : कांग्रेस	राजाराम सिंह भाकपा माले

गया	नवादा	मधेपुरा	सासाराम	सुपौल	किशनगंज	जमुई
जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते	जीते
जीतनराम मांझी पार्टी : हम	विवेक ठाकुर पार्टी : बीजेपी	दिनेश चंद्र यादव पार्टी : जदयू	मनोज कुमार पार्टी : कांग्रेस	दिलेश्वर कमत पार्टी : जदयू	डॉ जावेद पार्टी : कांग्रेस	अरुणा भारती एलजेपीआर

दरभंगा लोकसभा से भाजपा के गोपाल जी ठाकुर 1 लाख 78 हजार 156 वोट से जीते

DARBHANGA : बिहार की दरभंगा लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार गोपालजी ठाकुर फिर से चुनाव जीत गये हैं। दरभंगा में चौथे चरण का मतदान 13 मई को हुआ था। 4 जून को हुए मतगणना में गोपालजी ठाकुर ने 1 लाख 78 हजार 156 वोट से जीत हासिल की है। गोपाल जी ठाकुर ने राजद के ललित यादव चुनाव हार गये हैं। 23वें और अंतिम राउंड में कुल 10 लाख 24 हजार 986 मतों की गिनती हुई। जिसमें बीजेपी के गोपाल जी ठाकुर को 5 लाख 66 हजार 630 वोट मिले। राजद के ललित कुमार यादव को 3 लाख 88 हजार 774 वोट मिले। वही 23 हजार 904 वोट नोटा को मिला। गोपालजी ठाकुर के जीत की आधिकारिक घोषणा भी कर दी गयी है। इसे लेकर कार्यकताओं में खुशी की लहर दौड़ गयी है। लोग एक दूसरे को मिठाई खिलाकर अपनी खुशी का इजहार कर रहे हैं।

चिरैया में सीएसपी संचालक से दस लाख रुपये की लूट

AGENCY CHAMPARAN : जिले के चिरैया थाना क्षेत्र में गंगापीपर और हरबोलवा गांव के बीच सरेह में हथियारबंद बदमाशों ने एसबीआई के सीएसपी संचालक करुण कुमार से दस लाख रुपये लूट लिए। पुलिस ने सीसीटीवी को खंगाला है। इसमें दो संदिग्धों की पहचान की गई है। जिसकी तलाश में पुलिस की छापेमारी जारी है। सिकरहना डीएसपी अशोक कुमार ने बताया कि सीएसपी संचालक ने अब तक आवेदन नहीं दिया है। उसने पुलिस को दस लाख रुपये लूट की बात बताई है। मामले की जांच की जा रही है। अपराधियो को जल्द ही पकड़ लिया जायेगा। जाएंगे।पीड़ित सीएसपी संचालक शिकारगंज थाना के चमही गांव के बताये गये हैं। जो हरबोलवा गांव

के कुरसैल चौक पर सीएसपी का संतालन करते है। सोमवार को वे सीएसपी जा रहे थे,इसी बीच पल्सर बाइक पर सवार दो बदमाशों ने सरेह में घेर लिया और हथियार दिखाकर रुपयों से भरा बैग लूट कर फरार हो गये। सीएसपी संचालक ने बताया वे एक फाइनेंस कंपनी से रुपए लेकर हरबोलवा स्थित अपने केन्द्र लौट रहे थे।वही घटना की सूचना मिलते ही एसपी कांतेश कुमार मिश्र के निर्देश पर पूरे क्षेत्र में ताबडतोड़ छापेमारी की जा रही है।

बगहा में गंडक नदी में डूबकर चार की मौत

AGENCY CHAMPARAN : बिहार में पश्चिम चंपारण जिले के बगहा में गंडक नदी में डूबने से 4 बच्चों की मौत हो गयी है। मृतकों में 3 लड़कियां और एक बच्चा शामिल है। पहली घटना गोडिया पट्टी घाट की है। जहां गंडक नदी पार करने के दौरान 10 वर्षीय बच्चा और 16 वर्षीय किशोरी की गहरे पानी में डूबने से मौत हो गयी। दोनों मृतकों की पहचान गोडिया पट्टी निवासी अच्छे लाल सहनी के 10 वर्षीय पुत्र सुमित कुमार, विजय सहनी की 16 वर्षीय पुत्री पायल कुमारी के रूप में हुई है। दूसरी घटना बगहा के पुअरहाउस वार्ड नंबर 35 की है। जहां गंडक नदी में स्नान करने के दौरान भी दो बच्चियां डूब गई। स्थानीय लोगों ने दोनों के शव को बाहर निकाला। दोनों की पहचान राजेश गोड की 10 वर्षीय पुत्री प्रतिमा कुमारी व अवध बिहारी सहनी की 11 वर्षीय पुत्री तकली कुमारी के रूप में हुई है। इस घटना की पुष्टि एमएलसी भीष्म सहनी व वार्ड पार्षद मदन सहनी ने की है। जानकारी के अनुसार स्कूल बंद रहने के कारण दोनों गंडक पार अपने बाबा भूलाई सहनी के साथ खेती देखने गए थे। दोनों गंडक में पानी देख बिना बताए नदी पार करने लगे। इसी दौरान दोनों गहरे पानी में चले गए। इसकी सूचना मिलते ही स्थानीय लोगों की मदद से कड़ी मशक्कत के बाद दोनों शव गंडक नदी से बाहर निकाल गया। घटना के बाद परिजनो के बीच कोहराम मच गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। इस घटना से पूरे गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है।

सीतामढ़ी, बांका में झमाझम बारिश

AGENCY MUNGER : बंगाल की खाड़ी में साइक्लोन सकुर्लेशन बना है, जिसका प्रभाव बिहार में दिख रहा है। सीतामढ़ी में मंगलवार को 11 बजे के बाद मौसम का मिजाज बदला। इसके बाद तेज हवा के साथ झमाझम बारिश हुई। शाम 5 बजे बाद बांका में भी तेज बारिश हुई है। मौसम विज्ञान केंद्र ने 11 जिलों में बारिश को लेकर यलो अलर्ट जारी किया है। इसके साथ ही 19 जिलों में गर्म दिन रहने की संभावना है।

वहीं, सोमवार को राज्य के पटना, गया, मुंगेर और किशनगंज समेत कई शहरों में बारिश हुई। इसके साथ ही कई शहरों में तेज हवा चली। मौसम विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक एसके पटेल ने बताया कि अगले चार से पांच दिनों में अधिकतम तापमान में कोई खास बदलाव नहीं होने वाला है। बंगाल की खाड़ी में साइक्लोनिक सकुर्लेशन बना है, जिसके कारण उत्तर-पूर्वी बिहार में कहीं हल्की तो कहीं मध्यम बारिश की संभावना है। दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-मध्य और दक्षिण-पूर्व बिहार में मौसम शुष्क रहेगा। दक्षिण पश्चिम बिहार में तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

बजरंग दल के अखिल भारतीय अध्यक्ष मनोज जी ने शिविर में की शिरकत

AGENCY PURNIYA : रानी सती मंदीर कसबा मे अखिल भरतीय अध्यक्ष राष्ट्रीय बजरंग दल के मनोज जी ने शिविर में शामिल होकर उत्साह वर्धन किया। इसमें उन्होंने राष्ट्रीय बजरंगदल द्वारा भारत वर्ष मे किये गए सेवा कार्यो का उल्लेख किया। इस क्रम मे उन्होंने कहा अंतराष्ट्रीय हिंदू परिषद की युवा शाखा राष्ट्रीय बजरंग दल देश के युवाओ को राष्ट्र रक्षा की जानकारी दे कर शरीर स्वस्थ रखने की कला का विषय बता कर देश के सुरक्षा के विभागों में राष्ट्रीय बजरंग दल के कार्यकर्ता को सेना एवम पुलिस मे सेवा करने का सुअवसर भी मिल सकता हैं। जिससे समस्त हिंदू समाज की सुरक्षा की गारंटी मिलेगा। उन्होंने कहा कि साथ ही राष्ट्र चरित्र निर्माण में हनुमान चालीसा केंद्र खोल कर समाज में समरसता का भाव उत्पन्न करेगा जिससे लव जिहाद ,धर्मांतरण का कार्य रुकेगा। राष्ट्रीय बजरंग

दल देश के युवाओ का भविष्य है। उद्बोधन सुनने के लिए स्थानीय लोग भी आये। बाद में शिक्षार्थियों ने पांच दिन में सीखे गए समता, आसन, प्रणायाम, सूर्य नमस्कार, युध, निशाने बाजी एवम दंड का प्रदर्शन किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रांत अध्यक्ष बिनोद कुमार लाठ ने दिया ' अंत में कार्यकर्ताओ ने सीखी हुई कलाओं का प्रदर्शन किया । बैठक में मुख्य रूप से राष्ट्रीय बजरंग दल के केंद्रीय महामंत्री श्रीमान मनोज जी,प्रांत अध्यक्ष बिनोद कुमार लाठ,प्रांत महामंत्री अजय गर्ग, जामवंत स्वरूप जवाहर झा जी, राष्ट्रीय बजरंग दल प्रांत मंत्री अवनीश भारद्वाज, जिला कार्याध्यक्ष रवि भूषण झा, जिला महामंत्री अंजय कुमार मंडल, कसबा प्रखंड अध्यक्ष संजय जायसवाल, जिला किसान परिषद अध्यक्ष अर्जुन कुमार सिंह समस्तीपुर विभाग मंत्री सतीश कुमार, राघव, सोनू कुमार, मनोज कुमार, आशुतोष, सत्यम मिश्रा, आयोग मुख्य शिक्षक अजय जी, समाजसेवी सुनील लाठ, विशेष कुमार, इत्यादि शामिल रहे।

नीतीश के 'इंडिया' गठबंधन में जाने की बात का केसी त्यागी ने किया खंडन

AGENCY PATNA : बिहार की 40 लोकसभा सीटों पर चल रही मतगणना के बीच जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष और मुख्यमंत्री नीतीश के एक बार फिर इंडी गठबंधन में शामिल होने की चर्चा विपक्षी ने तेज कर दी है लेकिन जदयू के वरिष्ठ नेता केसी त्यागी ने इसका खंडन किया है। त्यागी ने कहा कि जदयू एनडीए का सबसे भरोसेमंद सहयोगी है। नीतीश कुमार को लेकर चल रही बातें पूर्ण रूप से भ्रामक हैं। उन्होंने शरद यादव के साथ जदयू नेताओं की वार्ता होने की खबरों का भी खंडन किया है। साथ ही कहा है कि नीतीश कुमार एनडीए में ही रहेंगे।बताया जा रहा है कि नीतीश कुमार को इंडी गठबंधन में फिर से शामिल कराने की जिम्मेदारी

एनसीपी प्रमुख शरद पवार को दी गई है। यह भी कहा जा रहा है कि शरद ने जदयू के नेताओं से संपर्क कर इस दिशा में वार्ता की है। अंतिम चरण के मतदान से पूर्व नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने दावा किया था कि चार जून के बाद हमारे चाचा जी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार फिर से पलटी मारेंगे।उल्लेखनीय है कि जदयू बिहार में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभर रही है। जदयू 16 सीटों पर चुनाव लड़ रही थी, जिसमें से 14 सीटों पर लीड कर रही है।

अमित शाह ने मांझी और चिराग को दी बधाई

AGENCY PATNA : बिहार की 40 लोकसभा सीटों पर चल रही कांउटिंग में लोजपा (रामविलास) पांच सीटों पर और हम पार्टी एक सीट पर लीड कर रही है। गया में जीतनराम मांझी लगभग जीत चुके हैं। हालांकि, आधिकारिक घोषणा होना बाकी है। इस बीच गृह मंत्री अमित शाह ने हम संरक्षक जीतनराम मांझी को फोन कर जीत की बधाई दी है। साथ ही उन्होंने लोजपा (रा) चीफ चिराग पासवान से भी बात कर सभी सीटों पर शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी है। अमित शाह ने दोनों नेताओं को बुधवार को दिल्ली बुलाया है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली में बुधवार को एनडीए की बड़ी बैठक होनी है।

बिहार के बेगूसराय से केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने सीपीआई के अवधेश राय को दी मात : बेगूसराय लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार और मौजूदा सांसद गिरिराज सिंह ने एक बार फिर शानदार जीत दर्ज की है। गिरिराज सिंह ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी सीपीआई के अवधेश राय 81,480 को मात से हरा दिया। गिरिराज सिंह को 6,49,331 मत प्राप्त हुए जबकि सीपीआई के अवधेश राय को 5,67,851 मत मिला। इस जीत के बाद गिरिराज सिंह ने अपनी जीत का सारा श्रेय जनता को दिया है।

मीसा को हराने के बाद रामकृपाल केंद्र सरकार में बने थे मंत्री, चौंकाने वाले आते रहे हैं परिणाम

पाटलिपुत्र में लालू की बेटी मीसा भारती जीतीं

AGENCY PATNA : पाटलिपुत्र लोकसभा सीट से आरजेडी प्रत्याशी और लालू प्रसाद की बड़ी बेटी मीसा भारती 88 हजार वोटों से चुनाव जीत गई हैं। बीजेपी प्रत्याशी रामकृपाल यादव यहां पिछले दो बार से मीसा भारती को यहां पराजीत कर रहे थे। मीसा भारती अपने चाचा रामकृपाल यादव से अन्ततः यह सीट वापस ले ली है।

परिसीमन के बाद बीजेपी का रहा है दबदबा : पटना लोकसभा सीट को पटना साहिब और पाटलिपुत्र में 2008 के परिसीमन में बांट दिया गया था। यहां एक जून को सातवें चरण में मतदान हुआ था।यहां मुख्य मुकाबला कभी लालू प्रसाद के हुनमान रहे

बीजेपी प्रत्याशी रामकृपाल यादव और लालू प्रसाद की बेटी मीसा बारती के बीच में है। मीसा भारती आरजेडी के टिकट पर चुनाव लड़ रही है।पाटलिपुत्र सीट ने हमेशा ही चौंकाने वाले नतीजे दिए हैं। परिसीमन के बाद पहली बार हुए लोकसभा चुनाव में 2009 में राजद के लालू प्रसाद यादव को जद-यू के रंजन प्रसाद ने हरा दिया था। लालू का परिवार इस सीट पर हमेशा ही हारा है। इसके बाद 2014 के चुनाव में आरजेडी ने मीसा भारती को अपना प्रत्याशी बनाया था। लेकिन वो हार गई थी। दरअसल, आरजेडी से टिकट नहीं मिलने पर रामकृपाल यादव ने पार्टी छोड़कर बीजेपी में चले गए थे। मीसा भारती को हराने पर केंद्र की मोदी सरकार ने रामकृपाल यादव को केंद्र सरकार में मंत्री पद से नवाजा था। लेकिन, 2019 में उनकी जीत का अंतर कम होने पर उन्हें मंत्री पद गंवाना पड़ा था। इस दफा पीएम मोदी से लेकर बीजेपी के कई बड़े नेताओं ने पाटलिपुत्र लोकसभा सीट पर रामकृपाल की जीत को पक्की करने के लिए सभा कर चुके हैं। इधर, आरजेडी प्रत्याशी मीसा भारती की जीत पक्की करवाने के लिए लालू परिवार से लालू प्रसाद, राबड़ी देवी तेजस्वी यादव के साथ साथ कांग्रेस के राहुल गांधी ने भी अपनी सभा की है। पाटलिपुत्र सीट ने हमेशा ही चौंकाने वाले परिणाम सामने आए हैं। यहां पर सबसे ज्यादा चार लाख यादव वोटर हैं। इसके बाद तीन लाख भूमिहार और एक लाख ब्राह्मण वोटर हैं। इस लोकसभा क्षेत्र में पौने दो लाख कुर्मी, इतने ही कोइरी और डेढ़ लाख मुस्लिम मतदाता हैं। रामकृपाल यादव और मीसा भारती के आमने सामने होने पर इस लोकसभा क्षेत्र के यादव होने से वोट बंट जाते हैं। अभी तक यहां रामकृपाल यादव को भाजपा के वोट बैंक का फायदा मिलता रहा है। जद-यू के समर्थक कुर्मी-कुशवाहा का वोट भी उनको मिलता रहा है। इधर, मीसा भारती को आरजेडी के परंपरागत वोटरों का साथ मिलता है।

सोनबरसा में हाइवा की चपेट में आकर महिला की मौत

AGENCY CHAMPARAN : जिले के हरसिद्धि थाना क्षेत्र के सोनबरसा पंचायत के वार्ड नंबर 2 में सोमवार की शाम हरसिद्धि सोनबरसा मुख्य मार्ग पर रेलवे कंस्ट्रक्शन कंपनी की हाईवा गाड़ी की चपेट में आने से एक महिला की मौत घटनास्थल पर ही हो गई जबकि एक बाइक चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके बेहतर इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हरसिद्धि के चिकित्सकों ने मोतिहारी रेफर कर दिया। घटना से आक्रोशित लोगों ने आधे घंटे के लिए हरसिद्धि छपवा मुख्य मार्ग को भी जाम कर दिया। थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर नवीन कुमार ने बताया कि सोनबरसा गांव वार्ड नंबर 10 निवासी श्री पटेल की पत्नी निर्मला पटेल हरसिद्धि से अपना इलाज करा कर बाइक सवार एक लड़के के साथ अपने घर सोनबरसा जा रही थी कि सोनबरसा की ओर से आ रही हाईवा गाड़ी की चपेट में आने से घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। घटना के तुरंत बाद वहां भीड़ इकट्ठा हो गई।

वहीं ग्रामीण के अनुसार सुगौली हाजीपुर रेल लाइन के निर्माण हेतु सोनबरसा मन (झील) से मिट्टी की कटाई हो रही है। रेलवे कंस्ट्रक्शन कंपनी की हाईवा गाड़ी के द्वारा मिट्टी ले जाकर रेलवे लाइन के लिए भरी जा रही है जिस कारण सड़क पर मिट्टी गिरकर धूल हो जा रही है। उसे धूल को मिटाने के लिए लगातार कंपनी द्वारा सड़क पर पानी गिराया जा रहा है जिससे सड़क पर फिसलन अधिक हो गई है। जिससे बाईक का चक्का फिसल कर हाईवा की चपेट में आ गया और महिला की मौत हो गई। ग्रामीणों का कहना है कि कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा बहुत लापरवाही बरती जा रही है। आक्रोश में ग्रामीणों ने हरसिद्धि छपवा मुख्य मार्ग को आधे घंटे के लिए जाम कर दिया, लेकिन थानाध्यक्ष के समझाने से जाम तो हट गया पर हाईवा गाड़ी घटनास्थल पर खड़ी है और ग्रामीण कंस्ट्रक्शन कंपनी के मालिक व ठेकेदार को बुलाकर समस्या का समाधान करने की बात कर रहे हैं।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता क्यों नहीं?

डॉ. वंदना सेन

यहाँ स्मरण करने वाली बात यह भी है कि कोरोना संक्रमण के चलते हमारी जीवन चर्या में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। जिसमें हर व्यक्ति को अपने जीवन के लिए प्रकृति का महत्व भी समझ में आया, लेकिन सवाल यह है कि क्या इस परिवर्तन के अनुसार हम अपने जीवन को ढाल पाएं हैं? यकीनन नहीं। वर्तमान में हमारा स्वभाव बन चुका है कि हम अच्छी बातों को ग्रहण करने के लिए प्रवृत नहीं होते। जीवन की भी अपनी प्रकृति और प्रवृति होती है।

वर्तमान में जिस प्रकार से तापमान बढ़ रहा है, उसका एक कारण यह भी है कि हमारा समाज पर्यावरण के प्रति सचेत नहीं है। इसे सरकारी विफलता के रूप में देखा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि सरकार केवल योजना बनाकर ही यह समझ लेती है कि उनका कर्तव्य पूरा हो गया, जबकि यह योजना नीचे तक जाए, यह जिम्मेदारी भी तो शासन की है, लेकिन शासन अभी तक पर्यावरण के मामले में कोई ठोस पहल नहीं कर सका। सरकार के सानिध्य में संचालित होने वाले गैर सरकारी संगठन भी पर्यावरण संरक्षण के अभियानों को अपनी आय का माध्यम मानकर ही कार्य करते हैं। इन संस्थाओं का कार्य कागजों पर सफलता दशार्ने वाला होता है, लेकिन धरातल पर उसकी परिणति वैसी नहीं होती जैसी दिखाई जाती है। पर्यावरण का अभियान केवल फोटो खिचाने तक ही सीमित होता जा रहा है।

आज पर्यावरण के कारण जल के अभाव में वसुंधरा सूख रही है। पेड़ आत्महत्या कर रहे हैं। नदियां समाप्ति की ओर हैं। कुए, बाबड़ी रीत गए हैं। यह एक ऐसा भयानक संकट है, जिसको हम जानते हुए भी अनदेखा कर रहे हैं। अगर इसी प्रकार से चलता रहा तो आने वाला समय कितना त्रासद होगा, इसकी अभी मात्र कल्पना ही की जा सकती है, लेकिन जब यह समय सामने होगा, तब हमारे हाथ में कुछ भी नहीं होगा। यह सभी जानते हैं कि प्रकृति ही जीवन है, प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। जब हम प्रकृति कहते हैं तो स्वाभाविक रूप मानव यही सोचता है कि पेड़ पौधों की बात हो रही है, लेकिन इसका आशय इतना मात्र नहीं, बहुत व्यापक है। प्रकृति में जितने तत्व हैं, वे सभी तत्व हमारे जीवन का आवश्यक अंग हैं। चाहे वह श्वांस हो, जल हो, या फिर खाद्य पदार्थ ही हों। सब प्रकृति की ही देन हैं। विचार कीजिए जब यह सब नहीं मिलेगा, तब हमारा जीवन कैसा होगा?

देश में अनेक संस्थाओं द्वारा पौधारोपण के कार्य भी किए जाते हैं। विसंगति यह है कि पौधारोपण करने के बाद उन पौधों का क्या होता है। यह सब देखने का समय हमारे पास नहीं है। पौधों के लिए जल ही जीवन है और पौधा भी एक जीवित वनस्पति है। अगर किसी पौधे का जीवन जन्म के समय ही समाप्ति होने की ओर अग्रसर होता है तो स्वाभाविक रूप से यही कहा जा सकता है कि ऐसा कर-के हम निश्चित ही एक जीवन की हत्या ही कर रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में हत्या के परिणाम क्या होते हैं, इसे बताने की आवश्यकता नहीं हैं, लेकिन यह सत्य है कि जिस पेड़ की असमय मौत होती है, उसकी आत्मा कराह रही होती है। हम अगर पेड़ या पौधे में जीवन का अध्ययन करें तो हमें स्वाभाविक रूप से यह ज्ञात हो जाता है कि जीवित वनस्पति जब मौत की ओर जाती है, तब उसकी क्या स्थिति होती होगी। अब जरा अपने शरीर का ही विचार कर लीजिए, उसे भोजन नहीं मिलेगा, तब शरीर का क्या हाल होगा।

वर्तमान में हम सब पर्यावरण प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं। यह सब प्रकृति के साथ किए जा रहे खिलवाड़ का ही परिणाम है। हम सभी केवल इस चिंता में व्यस्त हैं कि पेड़ पौधों के नष्ट करने से प्रदूषण बढ़ रहा है, लेकिन क्या हमने कभी इस बात का चिंतन किया है कि हम प्रकृति संरक्षण के लिए क्या कर रहे हैं। क्या हम प्रकृति से जीवन रूपी सांस को ग्रहण नहीं करते? क्या हम शुद्ध वातावरण नहीं चाहते? तो फिर क्यों दूसरों की कमियां देखने में ही व्यस्त हैं। हम स्वयं पहल क्यों नहीं करते? आज प्रकृति कठोर चेतावनी दे रही है। बिगड़ते पर्यावरण के कारण हमारे समक्ष महामारियों की अधिकता होती जा रही हैं। अगर हम इस चेतावनी को समय रहते नहीं समझे तो आने वाला समय कितना विनाश कारी होगा, कल्पना कर सकते हैं।

वर्तमान में स्थिति यह है कि हम पर्यावरण को बचाने के लिए बातों से चिंता व्यक्त करते हैं। सवाल यह है कि इस प्रकार की चिंता करने समाज ने अपने जीवन काल में कितने पौधे लगाए और कितनों का संवर्धन किया। अगर यह नहीं किया तो यह बहुत ही चिंता का विषय इसलिए भी है कि जो व्यक्ति पर्यावरण के प्रभाव और दुष्प्रभावों से भली भांति परिचित है, वही निष्क्रिय है तो फिर सामान्य व्यक्ति के क्या कहने। ऐसे व्यक्ति यह भी अच्छी तरह से जानते हैं कि पर्यावरण और जीवन का अटूट संबंध है। यह संबंध आज टूटते दिखाई दे रहे हैं। प्राण वायु ऑक्सीजन भी दूषित होती जा रही है। वह तो भला हो कि ईश्वर के अंश के रूप में में भारत भूमि पर पैदा हुआ हमारे इस शरीर में ऐसा श्वसन तंत्र विद्यमान है, जो वातावरण से केवल शुद्ध ऑक्सीजन ग्रहण करता है, लेकिन सवाल यह है कि जिस प्रकार से देश में जनसंख्या बढ़ रही है, उसके अनुपात में पेड़ पौधों की संख्या बहुत कम है। इतना ही नहीं लगातार और कम होती जा रही है। जो भविष्य के लिए खतरे की घंटी है।

आज के समाज की मानसिकता का सबसे बड़ा दोष यही है कि अपनी जिम्मेदारियों को भूल गया है। अपने संस्कारों को भूल गया है। किसी भी प्रकार की विसंगति को दूर करने के लिए समाज की ओर से पहल नहीं की जाती। वह हर समस्या के लिए शासन और प्रशासन को ही जिम्मेदार ठहराता है। हालांकि शासन भी जिम्मेदार है लेकिन शासन के बनाए नियमों का पालन करने की जिम्मेदारी हमारी है। शासन और प्रशासन में बैठे व्यक्ति भी समाज के हिस्सा ही है। इसलिए समाज के नाते पर्यावरण को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी हम सबकी है। पौधों को पेड़ बनाने की दिशा में हम भी सोच सकते हैं। प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए हम कपड़े के थैले का उपयोग कर सकते हैं। अभी ज्यादा संकट नहीं आया है, इसलिए क्यों नहीं हम आज से ही एक अच्छे नागरिक होने का प्रमाण प्रस्तुत करें। क्योंकि दुनिया में कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

यहाँ स्मरण करने वाली बात यह भी है कि कोरोना संक्रमण के चलते हमारी जीवन चर्या में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। जिसमें हर व्यक्ति को अपने जीवन के लिए प्रकृति का महत्व भी समझ में आया, लेकिन सवाल यह है कि क्या इस परिवर्तन के अनुसार हम अपने जीवन को ढाल पाएं हैं? यकीनन नहीं। वर्तमान में हमारा स्वभाव बन चुका है कि हम अच्छी बातों को ग्रहण करने के लिए प्रवृत नहीं होते। जीवन की भी अपनी प्रकृति और प्रवृति होती है। इसी कारण कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति प्रकृति के अनुसार जीवन यापन नहीं करता, उसका प्रकृति कभी साथ नहीं देती। हमें घटनाओं के माध्यम से जो संदेश मिलता है, उसे जीवन का अहम हिस्सा बनाना होगा, तभी हम कह सकते हैं कि हमारा जीवन प्राकृतिक है।

(लेखिका शिक्षाविद और सहायक प्राध्यापक हैं)

संपादकीय

एग्जिट पोल की परीक्षा

भारतीय जनता पार्टी ने पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में 46 सीटें जीत कर बहुमत हासिल कर लिया। राज्य में 60 में से 50 विधानसभा सीटों के लिए लोक सभा चुनाव के साथ मतदान हुआ था। भाजपा ने बाकी की दस सीटों पर पहले ही निर्विरोध जीत हासिल कर ली थी। राज्य में भाजपा के लगातार तीसरी बार सत्ता हासिल करने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कार्यकताओं की सराहना की। वहीं सिक्किम में 32 सदस्यीय विधानसभा में 31 सीटों पर सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (एसकेएम) ने 31 सीटों पर जीत हासिल की। लगातार दूसरी बार जीतने वाले दल को इस दफा प्रचंड़ बहुमत मिला है। 2019 तक लगातार 25 साल शासन करने वाली सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एसड़ीएफ) को केवल एक सीट मिली। पूर्व मुख्यमंत्री पवन चामलिंग की पार्टी प्रेम सिंह तमांग उर्फ गोले के आगे बुरी तरह धराशायी हो गई। वहां भाजपा और कांग्रेस जैसे बड़े. दलों का खाता भी नहीं खुला। अरुणाचल में कांग्रेस को एक सीट मिली। अरुणाचल भाजपा ने मुख्यमंत्री पेमा खांडू. के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ा था। उन्होंने इसे ऐतिहासिक दिन कहा और भाजपा के रिकॉर्ड. बनाने पर प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया। खांडू. ने इसे एंटी इनकंबेंसी की बाजाए प्रोझइनकंबेंसी करार दिया। वह पहले

कांग्रेस में थे मगर 2016 में मुख्यमंत्री बनते ही कांग्रेस छोड़क र पीपुल्स पार्टी ऑफ अरुणाचल प्रदेश में शामिल हो गए। मगर दो महीने बाद ही खांडू. भाजपा के साथ आ गए। पिछले चुनाव में राज्य में दूसरे बड़े. दल के तौर पर जनता दल (यूनाइटेड़) (जेड़ी यू) उभरी थी इसलिए माना जा रहा था कि वह खांडू. को कड़ी टक्कर देगी। क्योंकि ग्राम पंचायत व जिला परिषद में उसे बेहतर समर्थन प्राप्त था, परंतु विपक्ष के गठबंधन इंड़िया में सीटों को लेकर लंबे समय तक सहमति नहीं बन पाई। जिसका लाभ भाजपा को ले गई लगती है। सिक्किम की जीत के नायक तमांग शिक्षक की नौकरी छोड़.कर राजनीति में आए थे। 2013 में अपना नया दल बना कर पहली बार 2014 का चुनाव लड़ा, जिसमें दस सीटें लेकर नेता प्रतिपक्ष बन गए। 2016 में भ्रष्टाचार के मामले में जेल व विधायक होने से अयोग्य ठहराए जाने के बावजूद 2019 में 17 सीटें जीत कर 24 साल पुरानी चामलिंग सरकार को जड़.से उखाड़. दिया। हालांकि वे भाजपा के नेतृत्व वाले एनड़ीए का हिस्सा हैं इसलिए लोक सभा कर मात्र एक सीट को लेकर सब निश्चिंत ही नजर आ रहे हैं।

चिंतन-मनन

सच्चा पुरुषार्थ

यह बात उन दिनों की है जब स्वामी विवेकानंद की चर्चा दुनिया भर में फैल चुकी थी। उनके विचारों को लेकर हर जगह विचार-विमर्श चल रहा था। उन्हें एक आदर्श के रूप में स्थापित होता देख एक विदेशी महिला बहुत प्रभावित हुई। उसने स्वामी विवेकानंद से विवाह करने का मन बना लिया। बस, इसके बाद वह हरदम उन्हीं के बारे में सोचती रहती। संयोग से एक दिन स्वामी विवेकानंद एक सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे तो उसने उनसे मिलने की ठान ली। वह किसी तरह उसी स्थान पर जा पहुंची जहां सम्मेलन हो रहा था।

महिला स्वामी जी के समीप जाकर निर्भीकता से बोली,स्वामी जी, मैं आपसे विवाह करना चाहती हूं। स्वामी विवेकानंद ने उससे पूछा,क्यों, विवाह तुम आखिर मुझसे ही क्यों करना चाहती हो? क्या तुम यह नहीं जानती कि मैं तो एक संन्यासी हूं? महिला ने पूरी विनम्रता से कहा,देखिए, बात ये है कि मैं आपके जैसा ही गौरवशाली, सुशील और तेजमय पुत्र चाहती हूं। और वह तो तभी संभव होगा जब आप मुझसे विवाह करेंगे।

यह सुनकर स्वामी विवेकानंद ने उत्तर दिया, देखो, हमारी शादी तो संभव नहीं है, परंतु एक उपाय अवश्य है। महिला बोली,कैसा उपाय? स्वामी विवेकानंद बोले,आज से मैं ही आपका पुत्र बन जाता हूं और आप मेरी मां बन जाएं। आपको मेरे जैसा पुत्र मिल जाएगा। विवेकानंद की यह बात सुनकर विदेशी महिला उनके चरणों पर गिर पड़ी और बोली,स्वामी जी, सचमुच आप साक्षात ईश्वर के रूप हैं। इसे कहते हैं पुरुष और ये होता है पुरुषार्थ। सच्चा पुरुषार्थ तभी होता है जब पुरुष नारी के प्रति अपने मन में पुत्र जैसा भाव ला सके और उसमें मातृत्व की भावना उत्पन्न कर सके।

सनातन का संदेश देती भ्रमणशील जमात की यात्रा

सज्जन कुमार गर्ग

श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन निर्वाण की भ्रमणशील जमात एक चलता फिरता तीर्थ स्वरूप है। सनातन धर्म संस्कृति के प्रचार के लिए भारत के शहर से ग्रामीण स्थानों पर भ्रमण करते रहते हैं,जहां सत्संग प्रवचन धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं,यहां साधु संत वैदिक विधि-विधान के साथ गणेश-पंचदेव एवं कलश पूजन कर प्रवास करते हैं।श्री सत पंच परमेश्वर भ्रमणशील जमात बिहार मे लगभग चालीस बर्ष पूर्व 1984 में जमात पहुंची थी। पुन. 2024के मार्च मे यह यात्रा बिहार के बक्सर जिले मे प्रवेश की और बकसर के साथ पटना बाढ,जमालपुर मुंगेर के विभिन्न स्थानो की यात्रा कर अब झारखंड मे प्रवेश करने वाली है।

श्री सत पंच परमेश्वर पंचायती अखाड़ा बडा उदासीन,मुख्यालय प्रयागराज श्रीमहंत मेहश्वर दास जी,मुखिया महंत दुगार्दासजी,मुखिया महंत अद्वैत्वानंद जी महाराज की अगुआई में संत-महंतों का , तपस्वी संतों के चलता फिरता तीर्थ की यात्रा जारी है।श्रीमहंत मेहश्वर दास जी मुखिया महंत दुगार्दास जी के अनुसार वैदिक परंपरा के अनुरूप प्रवास के दौरान संत विशेष पूजन, ध्यान व वैदिक परंपराओं का निर्वहन करते हैं।भ्रमणशील जमात में पद निधारित हैं,श्री महंत,मुखिया महंत,पुजारी भंडारी,कोठारी तथा,कार्यवारी कोतवाल के पद नियुक्त हैं।

सनातन धर्म संस्कृति के प्रचार के लिए देश के चारो धाम तीर्थ स्थल कुंभ मेला सहित देश भर में भ्रमण पर रहती हैं जमात।

पहले भ्रमणशील जमात में हाथी,घोड़े ऊंट के साथ पूज्य संत की जमात देशभर का भ्रमण करती थी।

समय के साथ हर क्षेत्र मे बदलाव के मद्देनजर अखाड़ा के पूज्य संतो की भ्रमणशील जमात मे भी बदलाव किया गया। जहां वर्तमान समय मे हाथी,घोड़े बैलगाड़ी के स्थान पर अब वाहन के माध्यम से भ्रमणशील जमात देश भ्रमण कर रही है।

यात्रा का मकसद लोगो मे सनातन के प्रति जागरूकता पैदा करना ओलम्पिक तथा मठो की स्थित का अवलोकन भी करना है,लोगो मे अध्यात्मिक भाव बना रहे इसकी महती जवाबदेही संतो की हैं,श्रीमहंत मेहश्वर दास जी कहते है कि पहले भ्रमणशील जमात काबुल तक जाती थी,जिसका रिकॉड आज भी प्रयागराज मे संरक्षित है,उदासीन आचार्य श्रीचंद्र देव जी इस परंपरा के प्रर्वतक है उनकी मयार्दाओ का पालन आज भी किया जा रहा है ।हमलोग को अपने गुरू वचन पर विश्वास है ओर उसी का पालन कर रहे हैं।यह संस्था जगह-जगह सनातन का प्रचार करती है सिर्फ धर्म का ही प्रचार करना इसका मकसद नही है बल्कि मानव कल्याण के कार्यो से भी जुड़ी हुई है,संगठन द्वारा जनहित के अनेक कल्याण कारी काम किए जा रहे है खासियत यह है कि संत अपने काम का प्रचार नही करते सिख धर्म के प्रर्वतक श्री गुरुनानक देव जी के सुपत्र भगवान श्रीचंद्र महाराज ने उदासीन सम्प्रदाय की स्थापना की ओर भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए शैव,वैश्विक शाक्त, सौर तथा गणपतय मत को मानने वाले सभी धमार्चार्य को संगठित कर पंचायत उपासना प्रतिपादित किया,महंत दुगार्दास जी महाराज के अनुसार इस संप्रदाय मे हिन्दु धर्म मे जाती पाती,ऊच नीच,छोटे बडे का भेद मिटाकर समाजिक समरसता ओर मानव मात्र की मुक्ती के लिए नई राह दिखाई साथ ही हिन्दु धर्म मे वैचारिक वाद विवाद कौन मिटाकर सत सनातन धर्म को समन्वय का विराट रूप प्रदान किया ओर भारतीय संस्कृत की महान परंपरा को जन-मानस को समझाया,लोग कल्याण की परंपरा को आगे बढाते हुए इस संस्था द्वारा संस्कृत पाठशाला,मेडिकल कॉलेज,का संचालन किया जा रहा है बिहार यात्रा कि खासियत यह रही कि श्रीमहंत मेहश्वर दास जी ने घोषणा की राज्य के हर जिले मे संस्कार युक्त शिक्षा देने के लिए कम शुक्ल पर स्कूल खोले जाएगे।दुर्गा दास जी के अनुसार दरअसल में माने तो भक्ति ओर ज्ञान मार्ग के समुच्चय का संप्रदाय है उदासीन संप्रदाय।

रूढ़िवादी परम्पराओं के नाम पर महिलाओं का शोषण!

सोनम लववंशी

पश्चिमी अफ्रीका में स्थित सबसे छोटा देश गाम्बिया आजकल पूरी दुनिया में चर्चा का केंद्र बना हुआ है। कहने को इस देश की आबादी महज 26 लाख है, लेकिन यहां की संसद में एक ऐसा विधेयक लाया गया है। जो काफी हैरान करने वाला है। इस विधेयक के अनुसार महिलाओं के खतना करने की बात कही गई है। जबकि साल 2015 में ही महिलाओं के खतना पर रोक लगा दी गई थी। लेकिन बीते दिनों 8 नाबालिग बच्चियों का खतना करने को लेकर विवाद इतना गरमाया कि इस मामले में तीन महिलाओं को सजा देनी पड़ी। ऐसे में इस बहस ने पूरे देश के जनमत को दो हिस्सों में बांट दिया। एक पक्ष महिलाओं के खतना करने के पक्ष में खड़ा हो गया। जो समाज, संस्कृति और परम्परा के नाम पर महिलाओं का शोषण करने की वकालत कर रहा है जबकि दूसरा पक्ष महिलाओं का पक्षधर है जो इस प्रथा का विरोध कर रहा है। विडंबना देखिए कि अगर ये विधेयक कानून बन गया तो इस कुप्रथा को अपनाने वाला गाम्बिया दुनिया का पहला देश बन जाएगा और अगर ऐसा होता है तो सौ फीसद मुमकिन है कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसे मजहब के नाम पर महिलाओं के शोषण के हथियार के तौर पर देखा जाने लगेगा।

महिलाओं के प्रति पुरुषों की सोच आज भी अधिनायकवादी है। यही वजह है कि कहने को तो हम आधुनिक हो चले हैं, लेकिन हमारे समाज में अब भी कुछ रूढ़िवादी परम्पराएं हैं जो सदियों से जस की तस चली आ रही हैं। इनमें महिलाओं का फीमेल जेनिटल म्यूटिलेशन (एफजीएम) यानी खतना भी शामिल है। वैसे देखा जाए तो परम्पराओं के नाम के पर महिलाओं का शोषण सदियों से होता आया है। हमारे रीति रिवाज को आगे बढ़ाने का काम महिलाओं के जिम्मे ही रहा है। खास कर खतना जैसी कुप्रथा के पीछे भले ही धार्मिक चोला पहनाया जाता रहा हो, लेकिन असल मकसद महिलाओं की यौन इच्छाओं पर नियंत्रण करना है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन कि माने तो बच्चियों का कम उम्र में ही खतना कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में एक्सटर्नल प्राइवेट पार्ट के उन हिस्सों को कट किया जाता है, जिनसे यौन इच्छाओं का संबंध होता है। इसके पीछे महिलाओं के शादी के पहले संबंध न बनाने, या फिर यौन सुख से दूर रखने की सोच होती है। विडंबना देखिए कि इस दर्दनाक प्रक्रिया के दौरान न तो बेहोश किया जाता और न ही कोई डॉक्टर निगरानी के लिए मौजूद होता है। इस दर्दनाक प्रक्रिया के दौरान कई मासूम लड़कियों की मौत तक हो जाती है।

हमारा समाज आज भी एक लड़की को वस्तु की तरह ही देखता आया है। लड़की को छोटी सी उम्र से ही ये अहसास दिलाया जाता है कि वे पराया धन है उन्हें शादी करके दूसरा घर बसाना है। यहां तक कि खुद से बड़ी उम्र के पुरूष के लिए सम्भावित दुल्हन के रूप में देखा जाने लगता है। उन्हें शारीरिक पवित्रता की परीक्षा देने के लिए मजबूर किया जाता है। एक लड़की को बचपन से ही पितृसत्तात्मक समाज के ढांचे में फिट रहने की कवायद शुरू कर दी जाती है। उसके उठने, चलने या बोलने से लेकर शारिरिक जरूरत तक को कंट्रोल करने का काम किया जाता है। घर की इज्जत मान मयार्दा को जोड़कर बंदिशें लागू कर दी जाती है। गाम्बिया का यह प्रकरण देश दुनिया की महिलाओं के लिए एक सीख लेकर आया है। महिला अधिकारों की बातें करना और उसे हकीकत में लागू करना इन दोनों ही बातों में जमीन आसमान का फर्क है। महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए सदियों से संघर्ष करना पड़ा है। आज भी पितृसत्तात्मक समाज महिलाओं को अपने हाथों की कठपुतली बनाकर रखना चाहता है तभी तो उन्हें मिले अधिकारों को भी छिनने की कोशिश की जाती रही है। गाम्बिया की महिलाएं भी अभी ऐसे ही दर्द को झेलने पर मजबूर है। महिलाओं की राजनीति में बराबर की भागीदारी होना बहुत जरूरी है वरना कब उन्हें बंदिशों में बांध दिया जाए कोई नहीं कह सकता। गाम्बिया की महिलाओं को ही देखें तो यहां उनके दर्द को आवाज तक नहीं मिली। जिसकी सबसे बड़ी वजह यहां की संसद में महिलाओं की संख्या कम होना है। यहां की संसद में 92 फीसदी पुरुष है ऐसे में इस बात की गारंटी कैसे ले सकते है कि पुरुष महिलाओं के पक्ष में फैसला लेंगे? इस विधेयक का 4 के मुकाबले 42 मतों से पारित होना इस बात का सबूत है कि ये विधयेक महिलाओं के विरुद्ध है। आधुनिक होते समाज में जब इस तरह की कुप्रथा की वकालत की जाने लगे तो इसके परिणाम भी गम्भीर ही होंगे। महिलाएं सभ्य समाज की वह नींव है जिस पर सुनहरा भविष्य टिका है। लेकिन इस नींव को कमजोर कर दिया जाएगा तो पूरी सामाजिक व्यवस्था ही ध्वस्त हो जाएगी। लेकिन ये हमारे समाज का कड़वा सच ही है कि आज भी पितृसत्तात्मक समाज का वर्चस्व है। ये दुनिया के हर कोने में मौजूद है।

संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनिसेफ (संयुक्त राष्ट्र बाल कोष) की रिपोर्ट की मानें तो दुनियाभर में 23 करोड़ महिलाएं और बच्चियां ने खतना का दर्द झेला है। जबकि पिछले आठ वर्षों में खतना करने वाली महिलाओं और बच्चियों की संख्या में तीन करोड़ यानी 15 फीसदी का इजाफा हुआ है। दुनिया के ज्यादातर हिस्सों में इस कुप्रथा पर रोक लगा दी गई है, बावजूद इसके आज भी ये प्रथा हमारे समाज में निभाई जा रही है। इक्वलिटी नाउ नामक संस्था की रिपोर्ट ने भी इस बात की पुष्टि की है। ये प्रथा दुनिया के 92 से ज्यादा देशों में जारी है। भारत भी इस कुरीति से अछूता नहीं है। भारत में दाऊदी बोहरा समुदाय की महिलाएं इस दर्दनाक त्रासदी को झेल रही है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार, 14.4 करोड़ से अधिक मामलों के साथ अफ्रीकी देश इसका सबसे अधिक दंश झेल रहे हैं। दूसरे नंबर पर एशिया है, जहां आठ करोड़ महिलाओं ने इस दर्द की त्रासदी को झेला है। ये कुप्रथा छोटे, अलग समुदायों और दुनिया भर में प्रवासियों के बीच भी फैली हुई है। कई प्रवासी तो सिर्फ इसलिए अपने देश लौटकर आते है ताकि अपनी बच्चियों के खतना करवा सकें। सोचिए आज भी हमारा समाज लड़कियों के प्रति कितना संवेदनहीन है। हम आधुनिक होने का चाहे जितना ढोंग क्यों न कर लें लेकिन जब बात महिलाओं की आती है तो हमारे समाज का नजरिया पल भर में बदल जाता है।

सोचने वाली बात है कि इससे ज्यादा दर्दनाक क्या होगा, जब किसी के शरीर का एक हिस्सा सिर्फ इसलिए काट कर अलग कर दिया जाता है, क्योंकि एक प्रथा ऐसा करने के लिए कहती है। किसी धर्म विशेष का चोला पहनाकर महिलाओं का प्रताड़ित करने की रवायत सदियों से चली आ रही है। हम उस दर्द का अहसास भी नहीं कर सकते। वो भी किसी महिला के ऐसे अंग को जो उसकी नारी होने के पहचान है। किसी समाज को कोई हक नहीं बनता की

वह उसके वजूद को ही मिटा दे। यह अमानवीय प्रथा ने केवल उस समाज के लिए बल्कि पूरी मानव जाति के लिए शर्मसार करने वाली है। ये केवल संस्कृति से जुड़ा मुद्दा नहीं है। यह नारी की अस्मिता और उसके स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा भी है। इसके कारण महिलाओं मो कई गम्भीर बीमारियों का सामना करना पड़ता है। कई बार तो रक्तस्राव, बुखार, संक्रमण और मानसिक अवसाद जैसी समस्या भी पैदा हो जाती है। कई बार तो मासूम बच्चियां की खतना के दौरान मृत्यु भी हो जाती है।

गाम्बिया में, औसतन हर दूसरी लड़की इस यातना से गुजर रही है। इस प्रथा का शिकार होने वाली लड़कियों और महिलाओं को, इसके गम्भीर शारीरिक व मानसिक परिणाम झेलने पड़ते हैं। खतना की शिकार हुई महिलाओं को, बच्चे को जन्म देते समय जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं खतना करवाने के बाद महिलाओं में कुछ ऐसी समस्याएं भी होती हैं। जिसके कारण उनका समुदायों से बहिष्करण और पतियों द्वारा तलाक तक दे दिया जाता है। ऐसे में अब वक्त की नजाकत कहती है कि सिर्फ परंपरा या झूठी शान की वजह से किसी को पीड़ा देना उचित नहीं। खतना से होने वाले दुष्प्रभावों को दरकिनार करना भी गलत है। स्त्री-पुरूष दोनों समानता के हकदर है। ऐसे में किसी एक को रीति-रिवाज के नाम पर कष्ट देना ठीक नहीं। एक बात और महिलाओं का दर्द महिला ही समझ सकती है, इसलिए सिर्फ पुरूष को अधिकार नहीं कि वो महिलाओं से जुड़ा फैसला स्वयं ले।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899, Editor- Fahim Akhtar. Mob - 9431311669, E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

Right-wing rhetoric undermining India's discourse on Palestine

The descent into indignity and divisiveness in speeches and on virtual platforms witnessed during the long Lok Sabha election campaign has seeped into diplomacy as well. Here is an example of what I received from a retired Indian diplomat at the beginning of last month through an instant messaging service.

"Israel's Prime Minister Benjamin Netanyahu has done humanity a favour by crushing Islamists and Jihadis. It serves Muslims right," he wrote. I later found out that he had sent the same message to several friends and acquaintances. Despite spewing religious venom, he was gracious to add that "one feels sorry for the collateral damage though." All compassion had not ebbed from his heart, maybe some residue of his diplomatic training and practice remains even in retirement. His message went on. "Can you imagine that a Muslim lady anchor (sic!) on BBC said on air to white people that 'if you don't like Muslims in Britain, then you can always leave.' If Trump comes back (to the White House), he too would check these people in the United States." The anchor reference was to Bushra Shaikh, a British-Pakistani who first came into the limelight on BBC One's The Apprentice seven years ago.

Right-wing hate speech, combined with crass ignorance, is robbing India's policy discourse on the Israel-Palestine issue of logic, reason and, most of all, an accurate understanding. Contrary to what the former Indian diplomat wrote in his message, Netanyahu will be remembered by future generations of Palestinians as the singular Jew who facilitated the ultimate creation of a Palestinian state. A two-state solution in the fratricidal West Asia region, which appeared to be a fading dream for all Arabs even a year ago, has been made inevitable by Netanyahu's policies since the Hamas attack on Israel on October 7. It is a reasonable prediction that Netanyahu, although 74, may see in his lifetime two states on the land he considers indivisible. In spite of himself, or, to be more accurate, because of him. Ironically, such an assessment has been enhanced by, of all persons, Netanyahu's own Finance Minister Bezalel Smotrich. Few Israelis can match Smotrich in their hatred of Palestinians. He was, however, recently forced to admit at a meeting of Jewish local councils on the West Bank that "the danger of a Palestinian state becoming a reality is more tangible than it has been for years."

In recent weeks, several Indian pundits have expressed genuine surprise in print and electronic media that students in the US should have overwhelmingly worked themselves up against investments by their alma maters in companies with Israeli links and those which profit from the Netanyahu government's aggression against all Gazans. They cannot comprehend how or why Joe Biden's re-election as US President is now at risk because of anger among voters in some of America's swing states over Biden's all-out support for Israel in the ongoing violence. On February 1, Biden, seeking to balance such support, issued a presidential order which brings within the scope of US punishments those Jewish settlers who commit violence against West Bank Palestinians. Apologists in India for Netanyahu's policies — for anything he does — were shocked into disbelief by this executive order. On March 14, when the Biden administration imposed sanctions on two entire Israeli outposts on the West Bank, some Indian pundits went so far as to criticise the White House. It was as if India itself was being sanctioned by the US.

Largely unnoticed in India, but critically more important than US sanctions and visa bans against errant Jewish settlers on Palestinian land, has been a break by Biden from Trump's policy on such settlements. On February 23, Biden authorised his Secretary of State Antony Blinken to unequivocally assert that any new Jewish settlements are "inconsistent with international law". Blinken chose Buenos Aires to make the announcement. It was a pointed signal to right wing governments, such as in Argentina, that the US was cancelling its blank cheque to the incumbent Israeli government, which it issued after the Hamas onslaught last year. In November 2019, Trump changed a long-standing US stand that Jewish settlements on Palestinian land captured by Tel Aviv's military during the 1967 Arab-Israeli war was inconsistent with international law.

An election marked by intense heat & hate

Making political parties responsible for the conduct of their star campaigners and candidates should be formalised without diluting the accountability of the individuals.

SO, it is all over. Or, just not as yet. The marathon is over; the march to the podium remains. The race has left everyone, including the spectators, tired.

There are three ways to express our exhaustion: a sense of triumph as we complete yet another gigantic democratic exercise involving 970 million electors with a decent voter turnout and women continuing to play a lead role; a sigh of relief that an unprecedented phase of torrid toxicity unleashed by those that ought to be role models is over; a sense of nervous anticipation on the part of the pretenders to the Treasury Benches of the new Parliament.

The question before the nation, however, is whether we can expect a more participative democracy where public interest issues are debated with positivity and without the obsession to knock the other side down. Will those elected treat matdaan as people's vote donated (daan) to them for which they owe nothing to the people in return or as an expression of popular will (mat) accompanied by high expectations?After the dust and din has settled, what is it that the past 12 weeks following the announcement of the Lok Sabha elections by the Election Commission of India (ECI) on March 16 will remind us of? Will we be left remembering Mark Antony's words: "The evil that men do lives after them; The good is oft interred with their bones"? Or, is there hope that the new dispensation will deal with the pressing problems the nation faces?This election will go down as one of unmitigated heat and undisguised hate, both unprecedented. High temperatures and frayed tempers reminded one of Jawaharlal Nehru's words: "Elections were an essential and inseparable part of the democratic process... Yet, often enough, elections brought out the evil side of man... Was democracy to be a close preserve of those possessing thick skins and loud voices and accommodating consciences?"That is a question that even the electoral process conscience keeper, the ECI, found too hot to handle. People, too, were bothered by the question: Was it necessary to endure so much heat (and hate) to exercise the right to vote?However, what the ECI should seriously ponder over is whether it was possible to curtail the duration of this vital exercise. The delayed initial announcement, the seven phases (almost as long as Shakespeare's 'The Seven Ages of Man'), the long gaps between some phases, the helpless obsession with the Central police forces. No wonder, star campaigners ended up having hoarse throats, party spokespersons making predictable pontifications, pollsters inventing ingenious phraseology to avoid making forecasts falling foul of the ECI but unable to resist the temptation, YouTubers running out of new bottles for old wines and the entire nation glued to a suspense thriller that might turn out to be disappointing because their 'primary suspect' didn't turn out to be 'the man'.Then there were enough twists and turns. The electoral bond verdict before the elections declared the more than Rs 16,000 crore that went to the political parties' coffers as 'unconstitutional'. But that didn't prevent its use to woo voters for earning the mandate to govern the state. Talk of ends and means. Then came the EVM/VVPAT verdict, dashing the hopes of those who expected an outcome that could help allay their apprehensions of manipulation of the machines.The court also refused to step into the domain of the EC in people's quest of elementary voter turnout data contained in Form 17C. Eventually, in a bathetic turn of events, the hitherto reluctant ECI divulged the data that it was accused of hiding with 'motiveless malignity'.Many felt this was the most 'issueless' election, with no political party anchoring its campaign on a dominant issue. Instead, parties clutched to every straw that their tried-and-tested themes of religion and reservation threw up. People wondered if party manifestos were a formality overtaken by an increasingly vicious war of words. The rusted and blunted swords were out and though they couldn't kill, they were enough to cause infectious wounds. The din became louder and competitively more offensive. At times, even violating the Model Code of Conduct (MCC), no stone was left unturned in challenging the patience of the ECI, which found itself under pressure to show teeth. A cavity had already been created before the elections over the controversial law of appointment of the election commissioners. The abrupt departure of a serving election commissioner, leading to the hasty appointment of two election commissioners under a law challenged in vain in the SC sharpened the debate over the poll body's impartiality.The SC cannot be expected to intervene in every move required to strengthen the citizens' trust in the ECI. The commission needs to do that itself through a regular and sincere dialogue with the stakeholders, finding optimum solutions to allay their doubts instead of heightening their fears. The perceived alienation between the election body and civil society organisations is a sad development, especially if the ECI wants to remain in the forefront of leading the effort at electoral reforms.One of the principal electoral reforms facing the new government is evolving a transparent mechanism for the funding of political parties and the need to prescribe a limit on spending by political parties during elections. The ECI, on its part, must address the need to remodel the MCC, which nearly cracked during these elections. It is evident that the chief criterion for assessing the neutrality of the ECI is its willingness and ability to firmly enforce the MCC. Besides, the MCC needs an overhaul through a consultative process, with consequences of violations and operating procedures embedded and all complaints and their status posted on the website for full public disclosure. In addition, making political parties responsible for the conduct of their star campaigners and candidates should be formalised without diluting the accountability of the individuals.

If political parties can be arraigned as accused in cases under the PMLA and companies prosecuted under the Companies Act, why can't the parties take responsibility for the utterances of their campaigners?While the successful conduct of elections is another feather in the nation's cap, public discourse and conduct employed for winning votes is something that no right-minded Indian can be proud of. The political leadership must realise that "words are like arrows; once shot, they cannot be called back." Francis Bacon had warned: "It is not the lie that passeth through the mind, but the lie that sinketh in and settleth in it that doth the hurt."

Tragic negligence

Akhnoor bus mishap calls for accountability

The suspension of six J&K transport department officials following a mishap in which an overloaded bus fell into a gorge in Akhnoor, leaving 22 dead, underscores the dire need for accountability and systemic reform. The bus, with a capacity of 55, was carrying around 85 passengers. Such blatant disregard for norms and the fact that the bus was previously challaned for overloading are a sorry reflection on the regulatory mechanism. The situation is exacerbated by the poor condition of roads in Jammu district. Most of them are poorly maintained and have sharp bends, leading to frequent accidents. Last year alone, over 890 lives were lost on J&K's roads.

The magisterial inquiry and the suspensions must lead to a paradigm shift in road safety and the enforcement of rules. It is also imperative to address the root causes of frequent accidents. The inquiry panel, tasked with submitting its report

within a week, must operate in a thorough and transparent manner. It should also look into the regulatory framework. The involvement of technical experts in analysing the wreckage and the inclusion of eyewitnesses' testimonies are critical to getting to the bottom of the matter.This bus accident should catalyse a comprehensive review of transport policies and practices. Perfunctory investigations ordered after every major mishap have failed to curb the fatal errors committed by drivers. Robust measures to improve road infrastructure, scale up driver training and stringent enforcement of traffic regulations are essential for fostering safe driving practices in the long run. It is crucial to ensure that justice is served so that devastating losses are prevented. Only through rigorous accountability and proactive measures can we hope to transform our roads from deathtraps to safe pathways for all.

Blue Star was ill-planned, badly executed

The Rajiv-Longowal Accord could have shown the way forward, but it was never honoured

THE year 1984 was cataclysmic. Its defining moments — Operation Blue Star, assassination of the Prime Minister and the anti-Sikh pogrom — determined the internal discourse and history of the nation as probably no other year has since Independence.The lapse of 40 years has not helped to heal the hurt. The perceived non-delivery of justice to the victims and non-closure of the tragedy still haunt. A Truth and Reconciliation Commission to fix the responsibility of all concerned — the political elements, state actors, militants and killer mobs — would have lent finality and closure through a judicial process and reconciliation.Was Blue Star avoidable? Then Central Government projected it as an imperative action to eliminate militancy. Armed militants had usurped the shrine, fortified it with weapons and challenged the legitimacy of the constitutionally established polity. Would there have been any need to mobilise the Army had there been no armed militants and fortifications in the temple — so runs the argument.

The perception of the devout, however, is different. Blue Star is viewed as a premeditated desecration of the holiest shrine with the political objective to polarise the nation to secure votes in the parliamentary elections that were a few months away. One has to only look at the election campaign for the eighth Lok Sabha to understand this. Advertisements underpinning polarisation, like "Will the country's border finally be moved to your doorstep" or one showing a Sikh taxi driver, with a poser to the readers — "Do you feel safe in the taxi?" — dotted the election campaign.Catastrophic happenings often obscure objectivity, particularly in matters of faith. In the case of Blue Star, however, by now, certain facts are well-established and undisputed. To recapitulate, the Shiromani Akali Dal had launched a morcha on August 4, 1982, in support of its 10 demands — a mix of religious, political, economic and inter-state issues; it was daily courting peaceful arrests. Till June 1984, about 1,70,000 workers had courted arrests. There was hardly any village out of 12,000-odd in Punjab from where people had not contributed. The Akalis believed, in retrospect naively, that if they choked the jails with people, the Centre would be forced to concede their demands.The nearly two years of the agitation were interspersed with 26 negotiation conclaves, some of these attended by the Prime Minister and Opposition leaders. At least on two occasions, an understanding was reached, but the Centre withdrew at the last minute. It seems that the government had made up its mind against a political settlement and a Cabinet sub-committee decided in May 1984 for a military solution. Pranab Mukherjee's note of caution was brushed aside by the PM: "Pranab, I know of the consequences… The decision cannot be avoided."

The Chief of Army Staff was ordered by the PM on May 25 to march on to Amritsar, while a façade of negotiations was sustained by inviting Akali leaders for talks with a group of Union ministers on May 29. An understanding was arrived at, only to be retracted later by the Union ministers, saying "Madam does not agree."

Then Governor BD Pande was directed to requisition the Army and a formal order was issued by the Punjab Home Secretary on June 2. The troops carried out operations at the Golden Temple and 42 other gurdwaras. Pande had pleaded against the Army action and later confirmed that the PM "did not want a political settlement".

Jarnail Singh Bhindranwale, after the government backed out of two proposed meetings with him, including an aborted rendezvous with Rajiv Gandhi, cautioned his followers: "Keep having negotiations but also have your preparations complete." The preparations were for an armed struggle that ran parallel to the peaceful morcha of the Akali Dal.The militants called it 'hakkan di hinsa' or violence to secure their rights. To them, violence and consequential police reprisal were also a type of dialogue with the State, though by other means. Since the militants lacked legitimacy, they fell back on what scholar Mark Juergensmeyer called "meta-morality that religion provides".The violence accelerated. Pakistan stepped in to train and arm the militants. The State appeared ineffective, if not complacent. Weapons, including machine guns, now fortified the temple and if

then Punjab Police chief Pritam Singh Bhinder is to be believed, "they (read weapons) were not intercepted because there were oral instructions 'from the top' until two months ago not to check any of the kar sewa trucks".

The troops surrounded the temple on the night of June 3. The Army made no attempt to negotiate with the militants to make them come out of the temple. Major Gen Shabeg Singh, who led the militants, was an instructor at the IMA when Maj Gen Brar, who commanded the Army troops, was a cadet — both knew each other well. Had they talked, probably a bloody tragedy may have been averted — but these are ifs of which history is made. The militants fought, as Lt Gen VK Nayar, who served as GOC, Western Command, wrote, "because they were given no option".

The intervening night of June 5 and 6 was horrific. The Akal Takht, the historical symbol of Sikh sovereignty and struggle against Mughal and Afghan tyranny, was in ruins. About 330 security personnel and around 780 civilians, including pilgrims who were in the temple to commemorate the martyrdom day of Guru Arjan Dev, died. Private property beyond the western end of the temple suffered collateral loss, with shells overshooting the intended target. About 160 shops and 15 houses were destroyed.What was achieved? The troops liquidated a few hundred armed militants. However, it was a pyrrhic victory. Blue Star sowed the seeds for an ethno-national struggle, triggering greater violence. The nation was at war with itself, with soldeirs, some of them armed, abandoning barracks at many places. The militants were soon back in the temple and declared Khalistan in April 1986 from its precincts. Operations Black Thunder (1 and 2) had to be conducted.The ill-planned and badly executed Blue Star, without politically addressing the Punjab problem, proved disastrous. The Rajiv-Longowal Accord could have shown the way forward, but it was never honoured.Punjab suffered humongous losses. About 30,000 people died in a decade of violence. The state slipped from the number one position to below 15th among states on most of the socio-economic parameters. The ethno-national movement is dead, but it still resonates with a microscopic element abroad, raising concerns in India.

SBI becomes sixth most valuable company; M-cap soars to Rs 8 lakh cr

MUMBAI. Country's largest lender State Bank of India on Monday became the sixth biggest company in terms of market capitalisation with over Rs 8 trillion (Rs 8 lakh cr) in value and the only public sector entity to become so, which also make it the most valued government entity and the third most valuable bank.

At the end of trading hours on Monday, a day when the market was on a steroids after exit polls gave a clear third term to Narendra Modi, with the Sensex rallying by 3.4% and the Nifty soaring by 2.35%, the SBI counter closed at 905.80 on the BSE, gaining as much as 9.12% over Friday's close with a m-cap of Rs 8,08390.27 crore or Rs 8.08 trillion. The stock rallied more than 12% intra-day to hit a high of Rs 912.10. Its shares have soared over 40% so far this year.

Earlier last month SBI also made history by becoming the most profitable company in the March quarter booking a whopping Rs 20,968 crore in net income, which is way higher than RIL, HDFC Bank and TCS, the otherwise most profitable entities.The other six are Reliance Industries (Rs 20.44 trillion), Tata Consultancy Services (Rs 13.41 trillion) HDFC Bank (`11.95 trillion), ICICI Bank (Rs 8.15 trillion) and Bharti Airtel (Rs 8.05 trillion), are the other with over Rs 8 trillion m-cap. Infosys was also in Rs 8 trillion clud in the past but has since lost a lot of its value is only worth Rs 5.83 trillion now.Among the public sector block, LIC is the second biggest by far away from SBI with Rs 6.75 trillion m-cap, followed by NTPC at Rs 380,062.16, ONGC at Rs 3.57 trillion, and Powergrid at Rs 3.14 trillion.Banking stocks were on a roll on Monday as exit polls predicted sweeping win for the BJP, with other stocks like BoB, IDBI Bank ICICI, HDFC Indusind etc gaining handsomely. After the stellar March quarter earnings, most brokerages have a buy call on SBI with over 30 percent upside in the medium term.

Sebi updates app to fight against misinformation

MUMBAI. Capital market regulator Sebi has launched a mobile app to prevent flooding of misleading and biased information about markets/stocks, which also doubles up as a user-friendly interface with comprehensive tools aimed at simplifying complex financial concepts.

The Securities and Exchange Board (Sebi) in a statement on Monday said mobile app Saarthi2 is updated version of the Saarthi app, which was introduced earlier as a user-friendly interface with comprehensive tools aimed at simplifying complex financial concepts.The new app includes financial calculators, and has modules that introduce and explain KYC procedures, mutual funds, exchange traded funds, buying and selling shares on stock exchanges, an investor grievances redressal mechanism, and an online dispute resolution platform, Sebi whole-time member Ananth Narayan G said while launching the app.That apart, the app features a range of videos designed to assist investors in their personal finance planning."In today's era, where social media provides biased or misleading information, there is a need for an unbiased, objective, and trusted source of investment information. Saarthi app serves this purpose by empowering investors with reliable and essential insights into te securities market.This tool can be especialy useful for young investors who are at the beginning of their financial journey," Narayan said. The app has a dynamic content, allowing one to keep pace with the rapidly evolving market conditions, he said, and sought public suggestions to further refine and enhance the app so that it continues to serve investors, he said. The app is available for download on Google Play Store and the iOS App Store.

FSSAI asks food cos to remove '100% Fruit Juice' claims from labels, ads

NEW DELHI. The Food Safety and Standards Authority of India (FSSAI) on Monday issued a directive requiring food business operators (FBOs) to eliminate mention of '100% fruit juices' from labels and advertisements of reconstituted fruit juices.

This directive comes into immediate effect, with FBOs instructed to utilise their current pre-printed packaging materials by September 1, 2024.

"It has come to the attention of FSSAI that several FBOs have been inaccurately marketing various types of

reconstituted fruit juices by claiming them to be 100% fruit juices. Upon examination, FSSAI has concluded that, as per the Food Safety and Standards (Advertising and Claims) Regulations, 2018, there is no provision for making '100%' claim," FSSAI said in a statement.

Such claims are misleading, particularly under conditions where the major ingredient of the fruit juice is water and the primary ingredient, for which the claim is made, is present only in limited concentrations, or when the fruit juice is reconstituted using water and fruit concentrates or pulp, it added.

The FSSAI has emphasised the adherence of FBOs to the standards outlined in sub-regulation 2.3.6 of the Food Safety and Standards (Food Products Standards & Food Additives) Regulation, 2011 regarding the marketing of reconstituted fruit juices as '100% fruit juices'. FBOs are reminded to label products in line with the Food Safety and Standards (Labelling and Display) Regulations, 2020, including the mention of "reconstituted" in the ingredient list for juices made from concentrate.

Adani stocks crash up to 18%, wipe out recent gains amid volatility

NEW DELHI Adani Group stocks faced a setback on June 4 as its stocks crashed by up to 18%. This sharp decline came after a period of gains in the past few trading sessions.The sudden plunge seems to be linked to investors unwinding their speculative positions, possibly to lock in profits or lower their exposure to the market.

This correction led to a substantial decrease in Adani Group's market capitalisation, wiping out over Rs 10 lakh crore.In the previous trading session, the conglomerate's stocks had surged, adding Rs 1.4 lakh crore to its value, bringing the total market worth of the group's listed companies to nearly Rs 20 lakh crore.During the morning trading hours, Adani Total Gas faced the most significant loss, dropping nearly 18%.

Adani Energy Solutions followed with a slump of 12%, while Adani Power saw a decline of over 10%. Adani Green Energy and Adani Enterprises both experienced a 7% drop.Adani Ports and SEZ plummeted by 8%, Adani Wilmar by 8.5%, Ambuja Cement by 9.6%, ACC by 9%, and NDTV by 12%.The surge in Adani Group's stock prices had been fuelled by strong earnings performance for the fiscal year ending March 2024.The conglomerate's EBITDA (Earnings Before Interest, Taxes, Depreciation, and Amortization) soared by 40% Year over Year (YoY) to Rs 66,000 crore in FY24.Adani Group's market capitalisation had taken a hit following the Hindenburg report in late FY23.However, during FY24, the group focused on managing its debt and reducing founders' share pledges. The total group EBITDA grew by 40% YoY in FY24, with a 5-year compound annual growth rate (CAGR) of +27%.The group raised fresh funds through equity, debt, and strategic investors, while promoters increased their stake in group companies, leading

to a rebound in the group's market capitalisation.

Jefferies India, in its note, said, "The group is back on an expansion spree and eyeing a $90 billion capital expenditure over the next decade. In the report, we discuss the group's FY24 performance and the way ahead."Most of the group companies witnessed EBITDA growth ranging from 16% to 33%, except for Adani Wilmar, which experienced a decline.

The group's net debt, including debt related to the acquisition of the cement business, remained steady at Rs 2.2 lakh crore in FY24 compared to Rs 2.3 lakh crore.

There was improvement in the net debt to EBITDA ratio, which decreased to 3.3x in FY24 from around 5x YoY.

Adani Ports and Adani Power saw a reduction in net debt during FY24. However, Adani Enterprises and Adani Green witnessed increased leverage due to new capital expenditure projects undertaken by the companies.

Sensex crashes 5,000 points, investors lose over Rs 26 lakh crore

New Delhi The stock market experienced a major downturn on Tuesday, with the Sensex plummeting by 5,000 points. This abrupt decline resulted in investors collectively losing over Rs 26 lakh crore.The sharp drop in the Sensex, the key index of the Bombay Stock Exchange (BSE), sent shockwaves across the financial landscape, prompting concerns and uncertainty among market participants.

The primary trigger for this massive decline appears to be the prevailing political scenario as exit poll expectations suggested that Prime Minister Narendra Modi's BJP-led alliance might secure a majority in the Lok Sabha elections.However, the early trends of counting votes fell short of initial expectations, leading to market jitters.Investors reacted with caution, engaging in selling activity amidst the uncertainty. This rush to offload holdings contributed to the steep decline in market indices.

Analysts and experts scrambled to analyse the situation, attributing the downturn to a mix of factors, including political uncertainty and broader global market volatility.As the trading day concluded, investors grappled with the implications of the sudden

market turbulence, pondering their next moves in an atmosphere of inreased uncertainty.On the BSE, 26 out of 30 stocks were trading in red, while 42 of 50 stocks on Nifty50 were trading in red.

Shares of Adani Enterprises and Adani Ports crashed, dropping by 15% and 20%, respectively. This marks their worst single-day decline since February 2023.The two stocks led the pack as the top percentage losers on the Nifty50 index, which itself experienced a 5% decline.

Other companies within the Adani Group also saw notable decreases in their stock prices. Adani Green, Adani Energy Solutions, and Adani Power witnessed declines ranging between 16% to 19%.Adani Total Gas and Adani Wilmar also experienced losses, but to a lesser extent, with decline of 15.6% and 8.3%, respectively.

The downturn in these seven Adani Group stocks comes after a surge in their prices on Monday, fuelled by exit polls forecasting a third consecutive term for the Modi government.

Coal output helps power plants meet demand

NEW DELHI. Coal production and dispatch to power plants rose more than 10% in May from a year ago, allowing thermal generators to do the heavy lifting in meeting record electricity demand during the extended heat wave sweeping the northern and western regions.

The sharp uptick in production and despatch has ensured power stations have 30% more fuel than May 2023, with the coal ministry putting fuel inventories at 45 MT as on June 1, sufficient to meet the requirement of 19 days. It said the average daily inventory depletion at the plants during May has been only 10,000 tonnes per day.

On Monday, ministry data pegged the total domestic production during May at 83.9 MT (million tonnes) against a little over 76 MT in the same month of 2023. Output of state-run Coal India, which supplies bulk of the fuel for producing power, increased 7.4% to 64.4 MT 59.9 MT in the year-ago period. Production from captive mines and other entities jumped 32.7% to 13.7 MT against 10.3 MT in May 2023. Similarly, overall dispatch of 90.8 MT, reflects a 10.3% increase compared to 82.3 MT in the same period last year. Coal India's dispatches totalled over 69 MT, a growth of 8.5% from 63.6% a year ago. Coal despatches by captive mines and other entities rose to 16 MT, a 29.3% annual growth over 12.3 MT. Higher build-up of fuel stocks will stand power plants in good stead during the rainy season when mining gets disrupted, while humidity and farm sector needs push up electricity demand.

The ministry put the total coal stock with coal companies at 96.4 MT. Coal India is carrying a stock of 83 MT, while captive and other miners are holding 8.2 MT. Power demand, which has been rising since May 16-17 when the heatwave struck large parts of the country, hit an unprecedented 250 gigawatts on May 30.

2K freshers await onboarding as Infosys delays joining date

BENGALURU. It's been two years since Krishna (name changed) from Telangana received an offer letter from Infosys for 'System Engineer' position with a package of Rs 3.6 lakh per annum. He was in his final year of engineering and got a selection letter from the company in April 2022.

He received an offer letter in December 2022 saying he could join Infosys Mysore campus from February 2023. "Again, I received an email saying that they have extended my joining month to May 2023. I believed that I would be joining Infosys and rejected two other offers that I received from other companies. Till now I did not get any clarification from Infosys. Whenever I mail, I receive a system generated mail saying that I would be onboarded based on business requirement. I am still unemployed," he said.Over 2,000 campus recruits are waiting to be onboarded, according to Nascent Information Technology Employees Senate (NITES). It has urged the Ministry of Labour and Employment to investigate Infosys for repeatedly delaying the onboarding. These delays, which have persisted for more than two years, have caused significant hardship for the affected employees. Many had turned down other job offers in good faith, relying on Infosys's offer letters. Now, they face financial hardship and uncertainty due to the lack of income and a clear onboarding timeline," said Harpreet Singh Saluja, President, NITES.

An email sent to Infosys did not elicit any response. However, in the company's annual report, CEO Salil Parekh has mentioned that the company has recruited nearly 11,900 college graduates in 2023-2024. This is a 76% drop compared to the previous year as the company hired about 50,000 freshers in FY23.Saubhik Bhattacharya, General Secretary, All India IT and ITeS Employees' Union, told this newspaper that when a student is hired from campus, the university or college disallows him/her from participating in sequential recruitment drives. "Making these fresh candidates wait for more than a year to get a joining date, makes their lives miserable.""In November 2023, we received a complaint. A bunch of students were hired by Wipro from a university in Noida. After waiting for almost 1 year, only a handful of students received the joining letter while others were not hired," Bhattacharya said. When asked Wipro, it said in a statement, "Wipro is focussed on onboarding next gen associates based on business needs throughout the year."IT companies are not honouring job offers and delaying onboarding campus hires due to a combination of economic, strategic, and operational factors, said Puneet Arora, Managing Partner, Biz Staffing Comrade Pvt Ltd. "Economic uncertainty, including global downturns and inflation, prompts companies to manage costs and mitigate risks. Strategic adjustments, such as shifting project priorities and reallocating resources, can reduce the need for new hires. Market conditions with fluctuating demand for IT services also impact hiring plans," he said.

Air Canada expands flight network to India, adding 40% more seat capacity

On Monday, Air Canada announced it will expand its flight network to India, increasing seat capacity by 40% starting in late October for the winter 2024-25 season.

New Delhi Canada's largest airline, Air Canada, on Monday announced the expansion of its flight network to India, adding 40 percent more seat capacity beginning late October for the coming winter 2024-25 season.The country's flag carrier said it will operate 25 weekly flights with 7,400 seats each week this winter from Canada to India, comprising up to 11 weekly flights. These include flights from Toronto to Delhi and Mumbai, daily flights from Montreal to Delhi and daily flights to Delhi from

Western Canada via London Heathrow.Air Canada in an official press release said the new services include the only non-stop flight from Canada to Mumbai, improved service from Western Canada to Delhi with the introduction of new daily flights over London's Heathrow Airport and daily flights from Montreal to Delhi.The carrier will operate 25 weekly flights to India, the most comprehensive offering of any airline between Canada and India.

"India is an important market for Air Canada, reflecting longstanding and growing family and trade ties between our two countries. We are thrilled to expand our network to Mumbai and Delhi by building additional scale at our hubs in time for Diwali festivities this fall," Mark Galardo, Executive Vice President, Revenue and Network Planning at Air Canada, said."With new non-stop flights from Toronto to Mumbai, the addition of new flights to Delhi from Western Canada via London Heathrow, together with the unparalleled connectivity from our robust North American network, we are solidifying Air Canada as the leading airline offering the most travel options between Canada and India," Galardo said in a statement.The Toronto-Mumbai flight, the only non-stop flight linking two of the largest cities in both countries, will be operated with Boeing 777-200LR aircraft, the release said.The Indian diaspora in Canada is about 1.8 million strong. There are another one million Non-Resident Indians living in the country.Ties between India and Canada came under severe strain following Canadian Prime Minister Justin Trudeau's allegations in September last year of the "potential" involvement of Indian agents in the killing of a Khalistani separatist in this country.New Delhi rejected Trudeau's charges as "absurd". India has been maintaining that the main issue has been that of Canada giving space to pro-Khalistani elements operating from Canadian soil with impunity.

NDA Or INDIA? Battleground States That Hold The Key To This Election

New Delhi: The countdown to Verdict 2024 has begun. After a 44-day Lok Sabha election in which 64 crore people across India voted in seven rounds, the votes are being counted today and results will be announced.rime Minister Narendra Modi's BJP, seeking a third term in power, is confident of making big gains besides holding on to its traditional strongholds. On the other hand, the opposition INDIA bloc, in which parties with different ideologies have come together against the JP, insists that exit polls are off the mark.As the country waits for the mega verdict, here are battleground states that may hold the key.

West Bengal: Among the BJP's key focus areas in this election, West Bengal has 42 Lok Sabha seats. In the 2019 election, the Mamata Banerjee-led Trinamool Congress won 22 seats -- 12 down from its 2014 tally. The BJP scored a massive jump from two seats in 2014 to 18 in 2019. This time, the BJP has gone all-out in its Bengal campaign to further expand its footprint in the state. Besides adding to its Lok Sabha tally, a good Bengal score will also give the BJP an advantage ahead of the 2026 state polls.

Significantly, the BJP's good show in the 2019 general election did not fully convert to stellar numbers in the 2021 state polls. But the party, led by Leader of Opposition in Bengal Assembly Suvendu Adhikari and state BJP chief Sukanta Majumdar, have doggedly targeted the Trinamool government on local issues in the run-up to the election.Exit polls have predicted gains for the BJP, with some projections handing the party as much as 26 seats out of 42. Ms Banerjee has trashed the prediction, saying they have "no value".A big score in Bengal is critical to the BJP for multiple reasons. The party is hoping that gains in the East and South will help it widen its base beyond heartland states. Also, the BJP had maxed out in states such as Maharashtra in 2019, and after a change in equations, could lose some seats there. This loss needs to be covered.A surge in Bengal for the BJP will also be a big blow for the INDIA bloc in a key Opposition stronghold.Maharashtra: In no other state has the political landscape altered between two elections as much as in Maharashtra. In the 2019 polls, the BJP and the Shiv Sena were in an alliance. Together, they won 41 out of 48 seats. This time, the picture is completely different. Shiv Sena has split into two factions -- one led by Maharashtra Chief Minister Eknath Shinde that backs the BJP and another led by Uddhav Thackeray.

Sharad Pawar's NCP, too, has split and his nephew Ajit Pawar now leads the breakaway faction that is a part of the NDA government.The NDA and INDIA have a faction of the Shiv Sena and NCP each, and both fear a split in votes.A good tally for the INDIA bloc in Maharashtra will boost the

Opposition's national score and is key to its mission to beat the BJP. For the BJP, the challenge is to arrest its losses in a state that had contributed significantly to its 2019 tally.

Most exit polls have predicted that while the NDA may see a drop in its score as compared to 2019, the BJP-led alliance will be the dominant force. INDIA leaders have trashed the predictions.Odisha: Another eastern state where the BJP is hoping for gains this time is Biju Janata Dal's bastion Odisha, where Assembly polls have been held alongside the Lok Sabha election. In the 2019 election, Naveen Patnaik's BJD won 12 out of the coastal state's 21 seats and the BJP won eight. The BJP's score then had seen a huge jump -- from 1 seat in 2014 to 8 in 2019. This time, the BJP has aimed to emerge as the single-largest party in Odisha.Significantly, the BJP and BJD were on the verge of forging an alliance for the elections before talks fell through.Besides Bengal, Odisha is another big goal in the BJP's Mission East. The party's top leaders, including PM Modi and Union Home Minister Amit Shah, have campaigned exhaustively in the state.

Congress Ahead In Punjab, AAP Second, Akali And BJP Trail, Leads Show

New Delhi: The Congress is ahead in 7 seats in Punjab, while its closest rival Aam Aadmi Party (AAP) won 3 seats, according to the Election Commission's leads. The BJP has not won any seat. The Shiromani Akali Dal got 1 seat.The Congress and the AAP did not contest together in Punjab, which sends 13 MPs to the Lok Sabha. Both the parties are, however, partners in the national Opposition bloc INDIA.In 2019, the Congress won 9 seats in Punjab. AAP 1, Akali Dal 2, and the BJP 2.

The Congress's Amrinder Singh Raja Warring is leading in Ludhiana against BJP's Ravneet Singh Bittu, according to the Election Commission.Congress candidates were leading from Amritsar, Jalandhar, Fatehgarh Sahib, Gurdaspur, Patiala, and Ludhiana seats, and the AAP was ahead in Hoshiarpur, Sangrur and Anandpur Sahib, the trends showed.The party's Sukhjinder Randhawa, who is the former deputy chief minister, was leading in Gurdaspur seat against his nearest rival BJP's Dinesh Singh Babbu by 8,696 votes.The border state of Sikh-dominated Punjab, where the BJP and its former ally Akali Dal going solo, is in a multi-cornered fight on all 13 parliamentary seats with 328 candidates in the fray. In 2019, the BJP in alliance with the Akali Dal had contested three Lok Sabha seats (Amritsar, Gurdaspur and Hoshiarpur), while the latter contested the remaining 10 seats.

At that time, the state's ruling Congress had won eight seats -- Amritsar, Faridkot, Anandpur Sahib, Jalandhar, Khadoor Sahib, Ludhiana, Fatehgarh Sahib and Patiala seats -- while the Akali Dal won Bathinda and Ferozepur and the BJP Gurdaspur and Hoshiarpur seats. AAP won from Sangrur.

Union Minister Smriti Irani Trails In Amethi, Congress Candidate Leads

New Delhi: Union minister Smriti Irani, who unseated Congress's Rahul Gandhi from his family bastion Amethi, is trailing in the massive prestige battle raging there this year. The Congress candidate, Gandhi family loyalist KL Sharma, is leading by over 77,000 votes.

While the lead is slender, it could be part of the big surprise Uttar Pradesh has packed in this election. Around 11 am, the INDIA bloc -- comprising Samajwadi Party and the Congress in the state -- held a slender lead over the NDA in an epic neck and neck fight.This time, Rahul Gandhi left Amethi to Mr Sharma, and chose to take up his mother Sonia Gandhi's mantle in Raebareli, where he is leading by

over 60,000 votes.

As the representative of the Gandhi family in the two Uttar Pradesh bastions, Mr Sharma is said to know both constituencies like the back of his hand. He also has a better ground connect -- with party workers and the people.Giving her endorsement to the party choice, Priyanka Gandhi Vadra, while campaigning for Mr Sharma in Amethi, had said, "He (Sharma) has been associated with Amethi for the last 40 years. He was associated with my father (Rajiv Gandhi) here. He also worked with my mother (Sonia Gandhi) and my elder brother Rahul Gandhi. He has dedicated his entire life to Amethi".

The Congress is still smarting from the BJP victory of 2019, when MP Rahul Gandhi lost to Ms Irani after representing Amethi for three terms.

'UP Ke Ladke' Works For INDIA, Ram Temple Doesn't For BJP: Trends

New Delhi: Four hours into the counting of votes for the Lok Sabha polls, one thing was clear -- the BJP's Uttar Pradesh dominance faced a tough challenge from the INDIA bloc. At noon, the INDIA alliance of Samajwadi Party and Congress was leading on 42 out of 80 Lok Sabha seats -- five more than the NDA tally of 37.In the 2014 and 2019 elections, the BJP scooped up 71 and 62 seats. Exit polls predicted a repeat of the trend this time, but the trends so far hold true to the warning - exit polls don't always get it right. Several rounds of counting are still left and the picture may change anytime.Here's a look at key factors behind the BJP's big setback in Uttar Pradesh.

Did Ram Mandir Help BJP?

Among the biggest talking points in this election was the construction of the grand Ram temple in Ayodhya, a BJP poll promise since the 1980s, which BJP supporters claimed would be the decisive factor in the Lok Sabha election results.But trends show that Ayodhya failed to assert itself as the key factor even in Faizabad, the constituency it is part of. According to Election Commission data, the Samajwadi Party's Awadesh Prasad is leading by over 4,000 votes against BJP's Lallu Singh. If we look at the neighbouring constituencies, the BJP is leading on two of the seven constituencies bordering Faizabad -- Gonda and Kaiserganj. Out of the five others, Congress leads in two -- Amethi and Barabanki -- and SP in three -- Sultanpur, Ambednagar and Basti.

"UP Ke Ladke" Clicks This Time

Akhilesh Yadav and Rahul Gandhi were last seen campaigning together in the run-up to the 2017 Uttar Pradesh polls, but when the results came, the BJP had a whopping 302 seats and the Congress-SP alliance managed just 47. Seven years later, the two leaders, both more mature politically, were seen together again when they came together under the INDIA alliance for the big Lok Sabha fight. If the current trends hold, the two may have changed the picture this time. The INDIA bloc is currently leading on 42 of the state's 80 seats -- five more than the NDA -- in Uttar Pradesh.

INDIA Bloc Will Win, It Will Be An End To Dictatorship": Delhi Minister Gopal Rai

New Delhi: Even as the initial trends on the counting day show the BJP leading, Delhi Minister Gopal Rai says that the India alliance will win the 2024 Lok Sabha elections making an end to the dictatorship".

"We hope for a positive result from the country. We have positive feedback from all the seats AAP is contesting. We have faith that the India alliance will win and it will be an end to dictatorship. India bloc will win. The strike rate of Aam Aadmi party in Lok Sabha seats will be much better this time," Mr Rai said while speaking to ANI."In all seven seats of Delhi, India bloc candidates are contesting. I want to tell the people to continue this fight against dictatorship till the end. We will fight even today when the votes are being counted," he added.

Commenting on the recent trends indicating the BJP's lead, Mr Rai dismissed them, stating that these are just the latest updates and the results will be different by the evening. As per the latest trends, Bhartiya Janata party is leading in six seats in the national capital. Congress candidate from Chandni Chowk Lok Sabha constituency is leading with 7687 votes, while BJP candidate Praveen Khandelwal is trailing.The Bharatiya Janata Party is eyeing a third straight term in power, while the Opposition under the umbrella of the India bloc is seeking to wrest power from the ruling party. Most exit polls predicted a straight term for Prime Minister Narendra Modi, with quite a few of them projecting a two-thirds majority for the ruling BJP-led National Democratic Alliance (NDA).Two polls predicted the BJP would also improve its numbers from the 303 seats it won in the 2019 Lok Sabha polls. In the 2019 elections, NDA wrested 353 seats, of which the BJP won 303 alone. The Opposition's UPA got only 93 seats of which the Congress got 52.

Fighting Polls From Jail, Radical Preacher Amritpal Singh Leads Punjab Seat

New Delhi: Radical preacher Amritpal Singh, who is contesting the Lok Sabha polls in Punjab's Khadoor Sahib from an Assam jail, is leading the fight in early trends. According to Election Commission data at 10.30 am, Candidate Amritpal Singh, an Independent candidate, is leading by over 44,000 votes against Congress's Kulbir Singh Zira.

The chief of Waris Punjab de, Amritpal Singh is in prison at Assam's Dibrugarh after he was charged under the National Security Act last year. The radical preacher had made headlines after a mob attacked a police station in February last year over the arrest of one of his supporters. Amritpal

Singh was arrested after a massive crackdown, charged under NSA and moved to Dibrugarh jail.

In the 2019 election, Congress's Jasbir Singh Gill had won the Khadoor Sahib seat. Besides Amritpal Singh and Kulbir Singh Zira, Akali Dal's Virsa Singh Valtoha and AAP's Laljit Singh Bhullar are in the contest. While AAP is in the third spot now, the Congress is fourth.

Earlier, Amritpal Singh's Tarsem Singh father had said he was reluctant to fight the polls, but changed his mind after the 'sangat' -- meaning community -- insisted.Significantly, Khadoor Sahib is known as a 'Panthic' seat. Akali Dal, the other Panthic party in the contest, has said the radical preacher is contesting the polls to "free himself".

"How can a person who wears a 'chola' and partakes 'amrit' one year back represent the 'panth' and not a 103-year-old party which has a consistent track record of safeguarding 'panthic' values," said SAD chief Sukhbir Singh Badal in the run-up to the polls.

Probe agency NIA files chargesheet against 17 ISIS operatives for radicalising youth

The NIA had originally filed chargesheet against three persons in March 2023 and filed its supplementary chargesheet before the special court at Patiala House in New Delhi on Monday against 17 others.

New Delhi: The National Investigation Agency (NIA) on Monday chargesheeted 17 hardcore agents of the proscribed global terrorist organisation ISIS for being part of a conspiracy involving radicalisation of youth and fabrication of improvised explosive devices, according to an official statement.he NIA had originally chargesheeted three persons in March 2023 and filed its supplementary chargesheet before the special court at Patiala House in New Delhi on Monday against 17 others, of whom 15 are from Maharashtra and one each from Uttarakhand and Haryana, it said.

This takes the total number of accused chargesheeted in the case, which had exposed global linkages with foreign handlers, to 20, said the statement issued by the federal probe agency.

The accused, chargesheeted under various sections of the Indian Penal Code, Unlawful Activities (Prevention) Act, Arms Act and Explosive Substances Act, "were found to have been engaged in a massive ISIS conspiracy involving recruitment, training and propagation of the Islamic State of Iraq and Syria (ISIS) ideology among gullible youth, along with fabrication of explosives and improvised explosive devices (IEDs) and fund-raising for the banned outfit", it said.

The NIA, which has been cracking down on various ISIS modules active in the country with the intent to dismantle the nefarious terror network of the international organisation, had registered a case in November 2023 to probe this terror conspiracy.Its investigation had susequently led to the seizure of several incriminating documents and data relating to manufacturing of explosives and fabrication of IEDs, along with propaganda magazines like 'Voice of Hind', 'Rumiyah', 'Khilafat', 'Dabiq', published by the Islamic State (IS), the statement said.The agency had further found during investigations that the accused had been sharing digital files related to IED fabrication with their contacts.They were also found to be actively raising funds to further their terror plans as part of the ISIS agenda to spread violence in India and destroy its secular ethos and democratic system it said.The accused had carried out several acts preparatory to unleashing terrorist attacks, including recruitment of vulnerable youth into the organisation, the statement said."They had taken 'bayath' (pledge of allegiance) from an arrested accused Saquib Nachan, a habitual offender in many previous terror cases and a self-styled Amir-e-Hind for ISIS in India," the NIA said.The chargesheeted accused are part of Delhi-Padgha (Maharashtra) ISIS terror module case, an official said, adding the NIA is actively pursuing investigations in the case to trace further links of the accused persons.

NEWS BOX

Israel confirms death of four more hostages held in Gaza

Jerusalem. The Israeli military on Monday confirmed the deaths of four more hostages held by Hamas -- including three older men seen in a Hamas video begging for their release.The three men, Amiram Cooper, Yoram Metzger and Haim Peri, were all aged 80 or older. Looking weak and wary, they appeared in a video in December released by Hamas under the title, "Don't let us grow old here."The fourth hostage was identified as Nadav Popplewell.Israel's military spokesman, Rear Admiral Daniel Hagari, said the four men died together in the southern Gaza city of Khan Younis when Israel was operating there. The cause of death was not immediately known."We are checking all of the options," Hagari said. "There are a lot of questions."Israel carried out a major offensive in Khan Younis, a Hamas stronghold, early this year.Hamas claimed in May that Popplewell had died after being wounded in an Israeli airstrike, but provided no evidence.Cooper, Metzger and Peri were featured in a Hamas propaganda video in which Peri, clearly under duress, said in the video that all three men had chronic illnesses and accused Israel of abandoning them.The deaths added to the growing list of hostages who Israel says have died in captivity. On Oct. 7, Hamas took some 250 hostages back to Gaza. Roughly half were released during a brief ceasefire period in November. Of some 130 remaining in the strip, about 85 are believed to still be alive. That's as Israeli leadership brushes aside a Biden proposal to end the war and initiate another hostages-for-prisoners exchange.

Taiwan Detects 23 Chinese Aircraft Near Island In Under Three Hours

Last Taiwan's defence ministry said Tuesday it had detected 23 Chinese aircraft around the island in a window of less than three hours.China maintains a near-daily military presence around self-ruled Taiwan, which Beijing claims as part of its territory."Since 8:20 am (0020 GMT), we have successively detected a total of 23 aircraft… including 16 that crossed the median line," the defence ministry said, referring to a line bisecting the Taiwan Strait that separates the island from China.The ministry statement, issued at 10:40 am, said that the aircraft included fighter jets, transport aircraft and drones.aiwan's "military is using joint intelligence surveillance and reconnaissance methods to closely monitor the situation".Tuesday's surge comes after China sent in 19 aircraft, eight naval vessels, and four Chinese coast guard ships around Taiwan within a 24-hour period ending at 6 am Tuesday, according to Taipei's daily report.

Tensions on the strait have been ramped up since the May 20 inauguration of Taiwan's new President Lai Ching-te.China said his inauguration speech — in which he vowed to defend Taiwan's democracy and freedom — was akin to a "confession of Taiwan independence".Three days later it launched war games around Taiwan, encircling the island with warplanes and ships as a "punishment" for "separatist acts".

In another blow to PM, Brexit champion to stand in UK polls

LONDON. Nigel Farage, who helped champion Britain's departure from the EU, said on Monday he would stand as a candidate in next month's election and will lead the rightwing Reform Party in a major blow to PM Rishi Sunak.The surprise U-turn by Farage, now a TV host, will challenge Sunak's Conservatives for the support of right-leaning voters at a time when the governing party is already badly trailing the Labour Party in the polls.

Farage, 60, had previously said he would not stand in the July 4 vote in order to help Donald Trump fight the US election later this year. But Farage said he changed his mind because he felt guilty not standing up for people who had become disillusioned with politics and had always backed him."We are going to be the voice of opposition, and I tell you what, I have done it before, I'll do it

again, I'll surprise everybody," Farage told a news conference, saying it was a fait accompli that Labour would win but he wanted to position Reform as its main opponent. He said he would lead a "political revolt" in Britain because "nothing in this country works anymore", citing problems with public services such as healthcare and roads.Although Farage has stood unsuccessfully for parliament seven times he is still one of the most influential British politicians of his generation, putting pressure on a succession of PMs to take tougher positions on the EU and on tackling immigration. Farage has previously made comments that his political opponents have called racist. Farage appeared in front of a poster during the Brexit campaign showing lines of migrants under the slogan "Breaking Point" and last month said Muslims did not share British values.

US President Biden Labels Donald Trump as 'Convicted Felon' for First Time

Last. US President Joe Biden laid into his predecessor and likely opponent in November's election, Donald Trump, for being convicted by a Manhattan jury on 34 felony counts related to hush money payments, saying Monday night that "this campaign has entered uncharted territory."For the first time in American history a former president that is a convicted felon is now seeking the office of the presidency," AFP quoted Biden as saying.Echoing comments he made in reaction to the verdict at the White House last week, Biden said, "It's reckless and dangerous and downright irresponsible for anyone to say that it's rigged just because you don't like the verdict."

He added that the justice system was a core of American democracy and "we should never allow anyone to tear it down."

Trump, the presumtive Republican presidential nominee, was convicted on all counts related to a scheme during his 2016 presidential campaign to pay off porn actor Stormy Daniels, who said the two had sex. The former president slammed the verdict as politically motivated, and has blamed it on Biden — while seeking to make himself a political martyr in the eyes of supporters, suggesting that if this could happen to him, similar things might befall them.As he did last week, Biden noted that Trump's was a state case rather than a federal one, was heard by a jury chosen the same way all juries nationwide are chosen, and featured five weeks of evidence. He said the verdict was unanimous and Trump can appeal.

But Biden went farther Monday, accusing Trump of equating the justice system and elections. He said the former president was "attacking both the judiciary and elections system as rigged."'"Nothing could be more dangerous for the country, more dangerous for American democracy," Biden said.The president made no mention of the federal gun case against his son, Hunter, which began Monday in Delaware. Instead, he said, "Here's what is becoming clearer and clearer every day: The threat Trump poses in his second term would be greater than it was in his first."Biden was attending a fundraiser hosted by Richard Plepler, the former CEO of HBO, and featuring Shonda Rhimes, who created such television smashes as "Bridgerton," "Scandal and "Grey's Anatomy." Biden went on to reference a television ad his campaign has produced featuring another of his celebrity backers, actor Robert De Niro, narrating and asserting that Trump "snapped" after losing to Biden in 2020.

"Something snapped in this guy — for real — when he lost in 2020," Biden said, suggesting the former president was "unhinged" and was the driving force behind a mob of his supporters overrunning the U.S. Capitol on Jan. 6, 2021."He can't accept the fact that he lost, it's literally driving him crazy," Biden said.The Trump campaign did not immediately respond to a request for comment.Biden continued his sharp criticism, saying the former president "wants to terminate the Constitution" and "says if he loses there will be a bloodbath in America."

Georgia appeals court to weigh Fani Willis' role in Trump case in October

Washington. A Georgia appeals court will hear arguments in October on whether to disqualify Fulton County District Attorney Fani Willis from prosecuting Donald Trump for trying to overturn his 2020 defeat, a schedule that will likely postpone that trial until after the November 5 election.At issue is whether the prosecution is tainted as a result of Willis' past affair with her one-time top deputy whom she hired to work on the probe.Trump's legal team has sought to use the affair as a reason to try to derail the case, but the judge overseeing the trial said in March that Willis could remain on the case.The Georgia election interference case is one of three criminal trials that Trump still faces, though all three have been delayed for a variety of reasons.

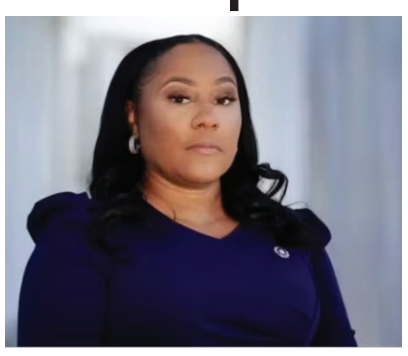

Last week, Trump became the first former president in US history to be convicted of a crime after a jury in New York City found him guilty on 34 counts of falsifying business records to conceal a hush-money payment to porn star Stormy Daniels in the weeks before the 2016 election.

The Georgia appeals court did not specify when in October it will hear arguments on whether to disqualify Willis, but the Atlanta Journal-Constitution reported that the case will be heard on October 4.Willis is also separately expected to ask the court to overturn a lower court ruling that dismissed several counts against Trump in the 2020 election subversion case on the grounds that the indictment was not detailed enough to sustain those charges.

Trump raises $141 million in May, bolstered by guilty verdict

WASHINGTON Donald Trump 's campaign and the Republican National Committee say they raised $141 million in May, a massive fundraising haul that includes tens of millions of dollars raised in the aftermath of his guilty verdict in his criminal hush money trial.

Trump's campaign is not required to publicly disclose its fundraising to the Federal Election Commission until later this month. But its decision to release the numbers early underscores how it sees the wave of contributions as evidence that last Thursday's verdict has energised the former president's supporters and as a sign that it will not hobble his efforts to return to the White House.

President Joe Biden's campaign has yet to release its own May fundraising totals. Trump and the Republican Party reported raising $76 million in April, topping the more than $51 million reported by Biden and the Democratic National Committee that month for the first time.It is unclear how much Trump and the GOP spent in May. But the sum could help them close the money gap with Biden that has persisted throughout the race.

Trump's campaign said in a press release Monday that it had received more than two million donations in the month of May averaging $70.27. More than a third of that haul — 37.6% — came in

the form of online contributions in the 24 hours after the verdict was announced, it said.About a quarter of the donors, it said, were new to the campaign.We are moved by the outpouring of support for President Donald J. Trump. The American people saw right through Crooked Joe Biden's rigged trial, and sent Biden and Democrats a powerful message – the REAL verdict will come on November 5th," Trump Campaign senior advisers Chris LaCivita and Susie Wiles said in a statement.Biden campaign spokesman Ammar Moussa said the campaign would "see how the numbers actually shake out" when they are officially reported, but said, "one thing's for certain: Trump's billionaire friends are propping up the campaign of a white collar crook because they know the deal - they cut him checks and he cuts their taxes while working people and the middle class pay the tab.

China's Moon Mission Scores Success: Spacecraft Departs with Lunar Rocks

Beijing China says a spacecraft carrying rock and soil samples from the far side of the moon has lifted off from the lunar surface to start its journey back to Earth. The ascender of the Chang'e-6 probe lifted off Tuesday morning Beijing time and entered a preset orbit around the moon, the China National Space Administration said.

The Chang'e-6 probe was launched last month and its lander touched down on the far side of the moon on Sunday.

Xinhua News Agency cited the space agency as saying the spacecraft stowed the samples it had gathered in a container inside the ascender of the probe as planned.The container will be transferred to a reentry capsule that is due to return to Earth in the deserts of China's Inner Mongolia region about June 25.Missions to the moon's far side are more difficult because it doesn't face the Earth, requiring a relay satellite to maintain communications. The terrain is also more rugged, with fewer flat areas to land.Xinhua said the probe's landing site was the South Pole-Aitken Basin, an impact crater created more than 4 billion years ago that is 13 kilometers (8 miles) deep and has a diameter of 2,500 kilometers (1,500 miles).

It is the oldest and largest of such craters on the moon, so may provide the earliest information about it, Xinhua said, adding that the huge impact may have ejected materials from deep below the surface.The mission is the

sixth in the Chang'e moon exploration program, which is named after a Chinese moon goddess. It is the second designed to bring back samples, following the Chang'e 5, which did so from the near side in 2020.

The moon program is part of a growing rivalry with the U.S. — still the leader in space exploration — and others, including Japan and India. China has put its own space station in orbit and regularly sends crews there.The emerging global power aims to put a person on the moon before 2030, which would make it the second nation after the United States to do so.

America is planning to land astronauts on the moon again — for the first time in more than 50 years — though NASA pushed the target date back to 2026 earlier this year.Catch live updates of the 2024 Lok Sabha election results here. Follow real-time updates from key states such as Maharashtra,Karnataka,Uttar Pradesh, Tamil Nadu, West Bengal and https://www.news18.com/elections/delhi-lok-sabha-election-result-2024-live-updates-aap-congress-bjp-liveblog-8920167.html">New Delhi. Catch the latest Lok Sabha and Assembly election news from Odisha and Andhra Pradesh. Don't forget to explore our Election Memes, which will make you smile during the intense poll battle.

Tiananmen Crackdown Anniversary 2024: Security Tight in China and Hong Kong

Beijing, China China authorities said they would close Beijing's Tiananmen Square on Tuesday, the 35th anniversary of the June 4 crackdown, while Hong Kong police also tightened security as activists in Taiwan and elsewhere prepared to mark the date with vigils.hinese tanks rolled into the square before dawn on June 4, 1989, to end weeks of student and worker protests.

Decades after the military crackdown, rights activists say the demonstrators' original goals – including a free press and freedom of speech – remain distant, and June 4 is still a taboo topic in China.

The ruling Communist Party has never released a death toll, though rights groups and witnesses say the figure could run into the thousands.In Beijing, an official website for Tiananmen Square posted a notice earlier saying the square would be closed for the entire day on June 4, and that those who had bought tickets for the square could get them refunded. The official social media account of the Beijing subway network announced that an exit of Tiananmen East station would be closed from June 2 to 5.

Small grous of "stability maintenance" volunteers – retirees with red armbands – have been keeping watch at

neighbourhoods in central Beijing since last week. Guards have also been stationed on pedestrian bridges, a regular practice during politically sensitive periods.On Chinese social media platforms including WeChat and Douyin, users were unable to change their profile photos, according to online posts and Reuters tests."Thirty-five years have passed, and the authorities remain silent. All that can be seen on the internet is 'A Concise History of the Communist Party of China', which says that a tragic incident was caused by the student movement in 1989," wrote the Tiananmen Mothers, a group of mostly China-based survivors and families of the victims of the Tiananmen crackdown.

"We cannot accept or tolerate such statements that ignore the facts."In China-ruled Hong Kong, police officers tightened security around downtown Victoria Park, where large June 4 candlelight vigils had earlier been held annually before tougher new national security laws came into force in recent years.Performance artist Sanmu Chen was taken away on Monday night by police as he attempted a mime performance near a police van. Chen was later released.Last Tuesday, Hong Kong police arrested six people for sedition under a new national security law enacted this year, stemming from what media said were online posts linked to June 4. Two more have been arrested since.

Taiwan President Says Tiananmen Crackdown Will Never Be Forgotten

Taiwan's president Lai Ching-te said in a statement on Tuesday that "the memory of June 4th will not disappear in the torrent of history".Lai, who was inaugurated last month as the leader of the democratic island China claims as its own, added that Taiwan would "respond to authoritarianism with freedom."

Catch live updates of the 2024 Lok Sabha election results here. Follow real-time updates from key states such as Maharashtra,Karnataka,Uttar Pradesh, Tamil Nadu, West Bengal and New Delhi. Catch the latest Lok Sabha and Assembly election news from Odisha and Andhra Pradesh. Don't forget to explore our Election Memes, which will make you smile during the intense poll battle.

NEWS BOX

T20 World Cup: Namibia's Ruben Trumpelmann sets new record with sensational start vs Oman

New Delhi. Ruben Trumpelmann scripted a new T20I record in Namibia's first match of the T20 World Cup 2024 campaign against Oman on Monday, June 3. The 26-year-old left-arm pacer became the first man to pick up two wickets in the first two deliveries of a T20I match when he rocked the Oman batting unit in their Group B match at the Kensington Oval in Bridgetown, Barbados.

T20 World Cup 2024: Full Coverage | Complete Schedule

Ruben Trumpelmann came out all guns firing after captain Gerhard Erasmus won the toss and opted to bowl on a pitch that had plenty of assistance for bowlers.Namibia vs Oman: UpdatesNamibia could not have asked for a better start as Ruben Trumpelmann got the big wickets of opener Kashyap Prajapati and captain Aqib Ilyas in the first two deliveries of the game. It was a left-arm swing bowling masterclass from Trumpelmann as he got the ball to swing into the right-handers. Prajapati was undone by a fuller-length delivery that swung late. Ilyas received an unplayable in-swinging yorker.

Trumpelmann, however, was not able to get a hat-trick, but he struck in his second over, removing wicketkeeper Naseem Khushi for 6. Namibia were reeling at 10 for 3 in the third over of the match after the sensational opening burst from Trumpelmann.Trumpelmann added another one to his tally on Monday as he got tail-ender Kaleemullah in the 19th over of the innings. Trumpelmann finished with figures of four for 21, his career-best in T20I cricket and the left-arm pacer found the perfect stage to do so.Trumpelmann's figures of 4 for 21 were also the best for Namibia in a T20 World Cup match as Oman were bundled out for 109 in 19.4 overs.

OMAN STRUGGLE IN BARBADOS

Oman never got going in their innings in Barbados as they kept losing wickets at regular intervals. Zeeshan Maqsood, their experienced all-rounder, was the only one in the top-order to score at a strike rate of over 100. However, Maqsood was dismissed for 22 from 20 balls as Oman slipped to 37 for 4 right after the powerplay.Khalid Kail and Ayaan Khan stitched a 31-run partnership, but Oman were unable to handle the variety and quality of the Namibian bowling attack.

Veteran David Wiese chipped in with three wickets while captain Gerhard Erasmus, with his off-spin took two wickets and conceded just 20 runs in four overs.

ODI World Cup gave Afghanistan confidence to beat any team: Captain Rashid Khan

New Delhi, Afghanistan captain Rashid Khan expressed delight in their dominant win over Uganda in their Group C opener of the T20 World Cup 2024 in Guyana on Tuesday, June 4. Rashid sent a warning notice to the rest of the teams, saying Afghanistan have taken a lot of confidence from their ODI World Cup success last year in India.

Afghanistan vs Uganda Highlights | ScorecardAfghanistan made a statement of intent on Tuesday, handing debutants Uganda a 125-run defeat. Uganda were bundled out for just 68 - the fourth-lowest total in the history of the men's T20 World Cup. Afghanistan were clinical with Rahmanullah Gurbaz and Ibrahim Zadran stitching a 154-run opening stand before Fazalhaq Farooqi dismantled the Ugand batting line-up with a five-wicket haul while conceding just 9 runs in 4 overs."Last World Cup that gave us so much confidence. That gave us the belief that we are capable of beating any side at any time. It is not just about the skill and the talent, it is also about the belief, and concentrating on what we are doing rather than thinking of what the opposition is doing," Rashid Khan said.

T20 World Cup: Full Coverage | Complete

ScheduleAfghanistan, who made their men's T20 World Cup debut in 2010, have come a long way since. Having made the next round of the T20 World Cup in the last three editions, Afghanistan have been labelled as dark horses and Rashid's men lived up to the billing in their opening match.

NEW ZEALAND NEXT FOR AFGHANISTAN

Afghanistan lost the toss, but they did not put a foot wrong on Tuesday against Uganda. Yes, Afghanistan slowed down with just 29 runs in the last 5.3 overs, but Gurbaz and Ibrahim made sure their team had a challenging total on the board.While Fazalhaq Farooqi ran through the top-order, Naveen-ul-Haq and Rashid Khan also chipped in with two wickets each."This is the kind of start we wanted as a team. Does not matter who we play, it is about the mindset. The hard work we have done in the last few weeks, the way the openers started and the way our bowlers bowled - it was a great overall team effort," he added.

T20 World Cup 2024: Important not to think about trophy jinx, says coach Rahul Dravid

T20 World Cup 2024: Head coach Rahul Dravid stressed India have been playing good cricket in major tournaments while conceding that they have not been able to get the job done in crucial knockout matches. India will begin their campaign in New York on June 5 against Ireland.

New Delhi. India head coach Rahul Dravid stressed that the senior national team has played good cricket in International Cricket Council (ICC) tournaments despite their 11-year-long wait for a major trophy. Dravid said India are not thinking about the trophy jinx and would focus on getting to the knockout stage of the T20 World Cup 2024Speaking to the press two days ahead of india's Group A opener against Ireland in New York, Dravid shed light on how India have been playing some of their best cricket in major tournaments while conceding that they have not been able to get over the line in high-pressure knockout games."To be very honest with you, I think we've actually played really well in these World Cup tournaments. In terms of our consistency, we've been very consistent. Obviously making the semi-final in Australia (2022). The World Test Championship is slightly different, it's not one tournament, but it's a whole cycle but playing extremely well in that cycle to get to the final there again," Dravid said."And then we know the 50-over World Cup where we had a great run and went into the final. So, in terms of our consistency and quality of cricket that we have played in these big tournaments, we've been right up there with some of the best teams."India, under Rahul Dravid's coaching tenure, reached the semi-final of the T20 World Cup in 2022 only to lose to England by 10 wickets. They reached the final of the World Test Championship in 2023 before losing to Australia. India were on a 10-match unbeaten run in the ODI World Cup at home, but faltered in the final hurdle against Australia at the Narendra Modi Stadium on November 19 last year.DON'T CARRY BAGGAGE FROM THE PAST: DRAVID

Under Rohit Sharma, India were the team to beat and entered the final as favourites, but were undone by Pat Cummins's brilliance In the big final.India last won an ICC trophy at the senior level in 2013 under MS Dhoni when they beat England to win the Champions Trophy. India won the Asia Cup last year, but the major trophy has been eluding the team.Rohit Sharma and Rahul Dravid have once again combined for the trophy hunt and Dravid said it's important not to carry baggage from the past."Yes, we probably haven't been able to get across the line in the knockout game. So, we just probably haven't been able to execute in that last phase. So, hopefully we play good cricket to get ourselves into those positions again and then maybe play good cricket on the day to cross the line."The important thing is when you start these tournaments is not to think about that, is to actually think about getting into those positions. You have to find yourselves in those positions where you are pushing for glory and that's all you can do as a group and as a team," he added.India have been handed a fairly easy draw in the group stage. After their opener against Ireland, India will face Pakistan at the Nassau Country Cricket Stadium in New York on June 9. India also have the USA and.

Hardik Pandya gets set with bat and ball in nets ahead of India vs Ireland

New Delhi S Hardik Pandya seems to be all set for India's opening match of the T20 World Cup 2024 campaign as the vice-captain went hard in the nets with both bat and ball. After a tough time in the IPL 2024 with MI, Hardik was able to recaliberate himself and played a fine knock during the warm-up game against Bangladesh. The all-rounder scored 40 off just 23 balls and also picked up a wicket in his 3 overs during the game.Now, after his heroics against Bangladesh, the Indian vice-captain has posted a video on his Instagram profile showing himself in the nets and doing some fielding practice. Hardik looked to be in fine rhythm while batting as he played some big shots and his timing was looking on point. The video also showed Hardik going full tilt with the ball, as he will play an important role in adding balance to the side during the tournament. You can see the full video below:According to Star Sports, India had a 3-hour training session where Hardik had a chat with batting coach Vikram Rathour and he had a special end overs practice session.

What did Hardik say about his IPL 2024 form?Hardik did address his poor form in the IPL heading into the World Cup and said he won't be running away from it and face things head on.

"These things happen; there are good times and bad times, these are phases that come and go. That is fine. I have gone through these phases many times and I will come out of it as well. I don't take my successes too seriously. Whatever I have done well, I have forgotten about them immediately and moved forward. Same with difficult times," he said."I don't run away from it. I face everything with [my] chin up," Pandya said.

"As they say, this too shall pass. So coming out [of these phases] is simple: just play the sport, accept that [you need to] maybe get better at your skillset, keep working hard - hard work never goes to waste - and keep smiling," he further added.

India will begin their campaign against Ireland on June 5, Wednesday and then turn their attention towards the Pakistan clash 4 days later.

T20 World Cup: Farooqi picks historic 5-wicket haul, Uganda register 4th lowest total

Fazal Farooqi picked up a historic 5-wicket haul while Uganda set an unwanted record in their debut match in the T20 World Cup on June 4.

New Delhi Fazal Farooqi had a night to remember as the Afghsan pacer ran through Uganda's batting order as the African side's debut in the T20 World Cup ended on a sour note on June 4, Tuesday. Farooqi picked up figures of 5 for 9 in his 4 overs as Uganda were bundled out for 58 runs while chasing 184 runs at the Providence stadium in Guyana.Afghanistan had scored 183 runs on the back of Rahmanullah Gurbaz and Ibrahim Zadran's opening stand of 154 runs. Farooqi would then wreak havoc in the very first over as he picked up 2 wickets off consecutive deliveries. This set the tone for the Uganda innings as they kept losing wickets at regular intervals with Naveen-ul-Haq picking up 2 wickets and Mujeeb-ur-

Rahman getting 1. Farooqi would then return and pick 3 wickets in his 3rd over and was once again on a hat-trick during that over.Farooqi's figures were the 4th best in the history of T20 World Cups. The best one is by Ajantha Mendis against Zimbabwe in the 2012 edition when he picked up 6 wickets for just 8 runs. Uganda , on the other hand, went on to record the 4th worst total in the history of the competition. They went past the 60 scored by New Zealand in the 2014 edition against Sri Lanka in Chattogram.

What Farooqi said about the performance

Speaking after his performance, Farooqi said he had missed out on a hat-trick a few times in his career and said he would try to be better in the future. The pacer said he was trying to bowl into the wicket and look at what was happening off the wicket.

"I have missed a hat-trick 7-8 times in my career. It's not something in my control but I will try better in the future. (Plans today) I tried to bowl into the wicket and see what happens. It swung from the beginning and later on I tried to bowl slower since it wasn't coming onto the bat that nicely," said Farooqi.

French Open 2024, Quarterfinals schedule: Swiatek, Alcaraz, Sinner and Gauff eye semis

The quarterfinal stages of the French Open are all set to get underway with Iga Swiatek, Coco Gauff, Jannik Sinner and Carlos Alcaraz all in action on June 4, Tuesday.

New Delhi, The big names will be in action on Day 10 of the French Open 2024 as the quarterfinal stages of the tournament gets underway. Iga Swiatek, Coco Gauff, Jannik Sinner and Carlos Alcaraz will all be in action on June 4, Tuesday, as they look to book their spot in the semi-finals at the Roland Garros. Swiatek will be going up against Marketa Vondrousova, while Gauff will take on Ons Jabeur.Sinner, who has been on a hot streak this year, will face a stern challenge in the form of the 10th seed Grigor Dimitrov while Alcaraz and Stefanos Tsitsipas will lock horns in the final major match of the day on the Court Philippe-Chatrier.

Swiatek, after her titanic battle with Naomi Osaka in the second round, has looked unstoppable as she defeated Marie Bouzková and Anastasia Potapova with relative ease. The World No.1 trounced Potapova 6-0, 6-0 in the previous round. Gauff has also shown great form in the competition and hasn't lost a single set so far. Jabeur had a tricky second round outing but has since found form and will be raring to go.Tsitsipas has been saving himself from 5-setters so far in the French Open and maybe forced to dig deep against Alcaraz, who has lost just a single set so far in the competition. Sinner is chasing the World No.1 spot at Roland Garros this year and had a small scare early on in his third round clash against Corentin Moutet. Apart from that, he has been flawless so far and will be raring to test himself against Dimitrov.

T20 World Cup 2024: Afghanistan rout debutants Uganda to start campaign with big win

Guyana. Afghanistan were at their ruthless best as they did not show any mercy to debutants Uganda in their Group C opener of the men's T20 World Cup 2024 on Tuesday, June 4. After posting 183 on a difficult pitch for the batters, Afghanistan bowled Uganda out for 58, sealing a 125-run win to begin their campaign in style. Fazalhar Farooqi became the first bowler to pick a five-wicket haul in the ongoing edition of the T20 World Cup as he led Afghanistan's rout at the Providence Stadium in Guyana.

Afghanistan vs Uganda Highlights | Scorecard

Fazalhaq Farooqi finished with figures of 5 for 9 while Naveen-ul-Haq and Rashid Khan picked two wickets each as Uganda were bundled out for the fourth lowest total in the history of men's T20 competition. It was a comprehensive bowling show from Afghanistan after a brilliant batting show from Rahmanullah Gurbaz and Ibrahim Zadran.Afghanistan have been labelled as dark horses in the tournament and Rashid Khan's men lived up to the billing, handing debutants Uganda a thrashing. The win will help Afghanistan boost their Net Run Rate and stay ahead of the chasing pack in a tough group, which also has New Zealand and former champions West Indies, who clinched a nervy win over Papua New Guinea.It was a momentous occasion for Uganda as the Brian Masaba-led side made its debut in the biggest T20 competition in the world after having worked their way through African qualifiers, beating Test-playing Zimbabwe and Kenya. However, Uganda found it tough as they were unable to compete and put up a fight against Afghanistan in the Group C clash.

Brian Masaba won the toss and opted to bowl, basing his decision on the recent trend in Guyana where the teams chasing have won. However, Uganda were not able to make an

inroad until the 15th over as opener Rahmanullah Gurbaz and Ibrahim Zadran mixed caution and aggression on a pitch that was doing enough for the bowlers.

RECORD PARTNERSHIP BETWEEN GURBAZ AND IBRAHIM

Gurbaz and Zadran added 154 runs for the opening partnership. It was the second-highest opening partnership in the history of the men's T20 World Cup. Only Jos Buttler and Alex Hales -- 170 in 2022 against India, had scored more than Gurbaz and Fazalhaq for the first-wicket stand.

It was a flawless innings from Gurbaz and Ibrahm as the two not only collected boundaries, but kept running hard between the wickets to put pressure on the Uganda fielders. Gurbaz battled cramps on a hot and humid evening at the Providence Stadium, but kept going.Gurbaz hit 4 sixes and as many boundaries for his 45-ball 76 while Ibrahim hit a six and 9 boundaries for his 46-ball 70.However, both the openers fell in successive overs after Uganda captain Masaba got the big wicket of Ibrahim in the 15th over.Both Ibrahim and Gurbaz had the opportunity to hit a hundred each, but they threw it away.The two wickets stemmed the run-flow as Uganda fought back with the ball, conceding just 29 runs in the last 5.3 overs. Afghanistan went from 154 for 0 in the 15th over to finish with 183 for 5 in 20 overs.

Sanjeeda Shaikh

Admitted Aamir Ali Changed A Lot After Their Wedding: 'He Was Never A...'

Sanjeeda Shaikh and Aamir Ali were TV's most beloved couple. So one could only imagine how heartbroken their fans were when they found out that they've filed for a divorce in 2020. Sanjeeda and Aamir were married for eight years before they decided to part ways. During their marriage, Aamir and Sanjeeda had given a joint interview in which she confessed Aamir had changed a lot after their wedding and in a good way. She revealed he had become more expressive after they got married."I have known him since the last 10 years. He has changed a lot after marriage. He was never an expressive person, and I think I have helped him become one. I am very vocal about what I feel, and wanted my partner to be like that as well. Now, he has become an expert in surprising me. For me, romance is all about spending quality time with your partner. When we

were dating, after shooting for 16 hours, I would ensure that I spent at least one hour with him every few days a week," Sanjeeda told Hindustan Times in 2016.Aamir agreed that he has become a lot more romantic after they got married. Speaking about what he loved about her, Aamir had said, "I love her positive attitude towards life. It's amazing. I hope she stops being so touchy. Perhaps it's a girlie habit." Sanjeeda revealed she loved Aamir's honesty.

I love his honesty, and the way he treats me. I want him to remain the way he is. My friends tell me that they want a boyfriend or a husband like Aamir. I would like him to be less hyper though. He is a cleanliness freak, which is good, but I am not as particular," she said.Aamir and Sanjeeda dated for several years before tying the knot in 2012. The couple separated in 2020 after 8 years of marriage and were granted divorce in 2021. Sanjeeda has the custody of their daughter, Ayra Ali. She recently opened up about her life after divorce. She told Hauterrfly, "I feel I am very lucky (to have emerged from) whatever happened with me. Maybe I felt then that I was the most depressed person, or I was very sad, or, 'What is happening with me, what is happening with my life?' But to overcome all of that and to be happy with this version of myself, I am blessed."

Prateik Babbar Upcycles Smita Patil's Kanjeevaram Sarees For Manthan Screening: 'It Was Challenging'

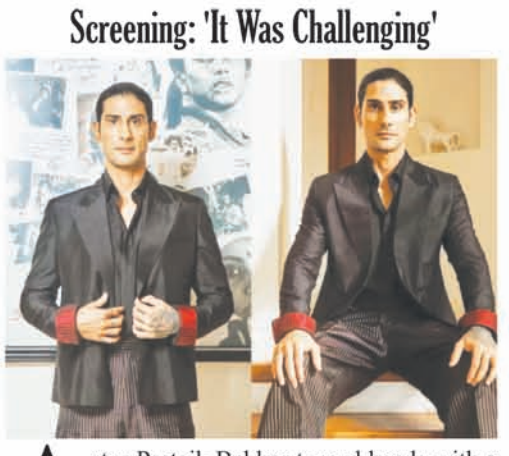

Actor Prateik Babbar turned heads with a unique style choice at the Mumbai screening of his late mother Smita Patil's film, Manthan. He wore a suit-pant made from her Kanjeevaram sarees, designed by Rahul Vijay. The designer expressed gratitude to Prateik for the opportunity to create this special outfit.Rahul shared on social media about delving into Smita Patil's archives for inspiration, blending her iconic style with Prateik's look. He wrote, "Thank you @_prat for letting me dig into the archives of your late mother, and the very iconic #SmitaPatil. When Prateik called me up asking me to dress him up for the Indian premiere of #Manthan, #SmitaPatil's first movie that was shown at the recent Cannes Film Festival, I knew I had to bring in elements of Smita Patil's style into his look. Now this was challenging because we were getting womenswear pieces & moreover we didn't know what we would end up finding from Smita Patil's wardrobe that would match Prateiks style."

Rahul further shared that Prateik's aunt played a significant role in helping them choose two precious silk Kanjeevaram sarees from the family's collection, carefully preserved through the years. The idea was to marry traditional Indian textiles with contemporary silhouettes, and to bring this vision to life, he collaborated with Monica Shah from Jade by MK.The result was a stunning cropped double-breasted tuxedo in rich black silk, with the delicate pinstripe pattern from one of the sarees artfully crafted into wide-legged pants. The striking red border of the second saree was skillfully incorporated into the design, adding a touch of sophistication and grace to the overall ensemble. This unique blend of heritage and modernity in Prateik's outfit truly showcased a brilliant fusion of traditional craftsmanship and contemporary fashion sensibilities.He continued, "We wanted to keep the silhouette very very modern considering we were recycling Indian sarees. I always like the juxtaposition of Indian textiles on modern silhouettes. And finally we decided on a cropped double breasted tuxedo in plain black silk & we recycled the second pinstriped saree into wide legged pants and used the red border of the saree as trims on the sleeves (the design was lifted from a recent look that the brand did for their couture collection)".

Sania Mirza BREAKS Silence On Her Love Life Months After Ex-Husband Shoaib Malik's 3rd Wedding

Sania Mirza has not found love again after she separated from cricketer Shoaib Malik. The Tennis legend confirmed that same in the new promo of the Great Indian Kapil Show. In the promo attached to the recently released episode starring Janhvi Kapoor and Rajkummar Rao, Kapil confirmed he will be hosting Mary Kom, Sania Mirza and Saina Nehwal in the next episode of The Great Indian Kapil Show. In the promo, Kapil spoke about various subjects, including Sania's lifeThe promo opened with Kapil introducing the ladies and teasing the gags he has in store for them. While Mary gets confused between Sania and Saina, Kapil teased Mary about her marriage as well. The comedian then reminded Sania that Shah Rukh Khan offered to play her love interest if a film on her was made. Sania cut Kapil off to say, "Abhi mujhe pehle love interest dundna hai (I have to find a love interest first)." Her answer left Kapil and Archana Puran Singh in splitsFor the unversed, in 2016, Shah Rukh had launched Sania's biopic, titled Ace Against Odds, and said he would not only be open to producing a film based on the book but also starring in it. "Whenever there is a movie made on Sania, I think it will be very inspiring and it will be fantastic. And I don't know… ask her if she will let me play her love interest. But, I will produce it for sure," he said at the launch, as reported by NDTV.

Meanwhile, Sania's comments on her love life comes months after her ex-husband Shoaib Malik got married for the third time. The Pakistani cricketer married popular Pakistani actress Sana Javed. They shocked everyone by sharing wedding pictures in January this year.

Shilpa Shetty

Starts Monday With 'A Heart Full Of Gratitude', Shares Happy Moments With Kids Viaan, Samisha

Shilpa Shetty often shares fun moments and snippets on her Instagram handle for which she enjoys a massive fan following. As she starts the month of June in good faith, the actress shared a bundle of happy moments with her kids Viaan and Samisha and expressed gratitude. Sharing the photos, she wrote, "Starting the week with a smile and a heart full of gratitude ♥ ✨."

Recently, Shilpa Shetty visited Assam to offer her prayers at Kamakya Temple. Her visit to the temple comes a few days after Enforcement Directorate seized Shilpa and Raj Kundra's assets worth Rs 98 crore in a crypto assets ponzi scheme case. Last month, ED seized Raj's properties worth Rs 97.79 crore. The attached properties include a residential flat in Mumbai's Juhu, in the name of Shilpa. Another property is a residential bungalow in Pune and Equity shares in the name of Raj Kundra, the ED said.The Mumbai zonal office of ED has provisionally attached immovable and movable properties of Raj under the provisions of the Prevention of Money Laundering Act (PMLA), 2002. It has been alleged that Kundra along with others collected huge amounts of funds in the form of bitcoins (worth Rs 6,600 crore in 2017) from the "gullible public with the false promises of 10 per cent per month return in the form of bitcoins".

The couple issued a statement via their lawyer. They said they will cooperate with the concerned authorities. They hoped for "fair investigation" and stated that they had full faith in the Indian judiciary system."We shall follow the due process of law and take necessary steps as prescribed under the provisions of the Prevention of Money Laundering Act to protect the liberty and property of my clients. On the face of it, there is no prima facie case made out against my clients Mr Raj Kundra and Mrs Shilpa Shetty Kundra," their statement read.